December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:28 PM Page 1

www.hillmail.in

दिसंबर, 2017 ₹25.00

हिल-मेल

एक अभियान पहाड़ों की ओर लौटने का

हिल रत्न 2017 · 50 · शिखर पर उत्तराखंडी · वार्षिक विशेषांक

शिखर पर उत्तराखंडी

श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मानीय मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

लक्ष्य अंत्योदय प्रण अंत्योदय पथ अंत्योदय

गरीब कल्याण वर्ष

श्री सतपाल महाराज
माननीय मंत्री, पर्यटन, संस्कृति एवं सिंचाई, उत्तराखण्ड

पर्यटन, स्वरोजगार एवं तीर्थाटन को देकर गति
उत्तराखण्ड की हो रही है प्रगति

पर्यटन विभाग द्वारा संचालित की जा रही महत्वपूर्ण योजनाएं

पं. दीनदयाल उपाध्याय मातृ-पितृ तीर्थाटन योजना

इसके अंतर्गत 60 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों को नि:शुल्क तीर्थ यात्रा कराये जाने हेतु योजना संचालित की जा रही है।

ग्रामीण पर्यटन उत्थान योजना

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन क्षेत्र से स्थानीय ग्रामीणों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने एवं पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने हेतु ''ग्रामीण पर्यटन उत्थान'' योजना प्रारम्भ की गयी है।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना

उत्तराखण्डवासियों को पर्यटन क्षेत्र में स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तथा पर्यटन विकास में स्थानीय सहभागिता प्राप्त करने के उद्देश्य से "वीर चंद्र सिंह गढ़वाली स्वरोजगार" योजना संचालित की जा रही है।

राज्य सरकार द्वारा धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किये जाने वाले विशेष प्रयास

• विभिन्न शिखरों पर स्थित देवी-देवताओं के स्थानों को सुगम यातायात के साधन जैसे फ्यूनिकुलर (**Funicular**) अथवा रोप-वे (**Ropeway**) के माध्यम से जोड़ने का प्रयास • राज्य सरकार द्वारा साहसिक, धार्मिक, स्वास्थ्य एवं पाक कला पर आधारित पर्यटन को बढ़ावा दिये जाने का प्रयास।

उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद्
पं. दीनदयाल उपाध्याय पर्यटन भवन, ओएनजीसी हेलीपेड के निकट, गढ़ी कैंट, देहरादून-248001 (भारत)
फोन: # +91 135 2559898/ 2559987, www.uttarakhandtourism.gov.in, www.gmvnl.in, www.kmvn.gov.in

उत्तराखण्ड
सचमुच स्वर्ग

गंगा की शुद्धता, हमारी जिम्मेदारी | गंगा बचाएं, जल बचाएं, जीवन बचाएं

HILL MAIL
पहाड़ की चिट्ठी
(एक अभियान! पहाड़ों की ओर लौटने का)

प्रबंध संपादक : चेतना नेगी
संपादक : वाई एस बिष्ट
उत्तराखंड प्रभारी : वर्षा सिंह
9810071578

विशेष संवाददाता
दिल्ली : ए एस रावत
ऋषिकेश : प्रबोध उनियाल
पिथौरागढ़ : राजीव पांडे
रुद्रप्रयाग : आमोद पंवार
लखनऊ : अल्पना सिंह
दुबई : अजयपाल सिंह
हिलमेल वेबसाइट : महेन्द्र नेगी
फोटो एवं वीडियो : एससी राणा
: प्रदीप सिंह नगरकोटी
डिजाइन : सीमा रावत
विधि सलाहकार : शंकर डंगवाल

मानद सलाहकार
उर्मिला सिंह, समाजसेवी
अद्वैता काला, लेखिका
मेजर जनरल (रि.) शेरू थपलियाल, रक्षा विशेषज्ञ
प्रवीण पाठक, महाप्रबंधक, ब्रह्मोस एयरोस्पेस
प्रो. अशोक डिमरी, जेएनयू, दिल्ली
श्री जय सिंह रावत, वरिष्ठ पत्रकार, देहरादून
विनोद कापड़ी, वरिष्ठ पत्रकार एवं फिल्म निर्देशक
सुशील बहुगुणा, वरिष्ठ समाचार संपादक, एनडीटीवी
प्रो. हर्ष डोभाल, दून यूनिवर्सिटी, देहरादून
अनुराग पुनेठा, वरिष्ठ समाचार संपादक, लोकसभा टीवी
मनजीत नेगी, एसोसिएट एडिटर, आज तक
अजीत दुबे, असिस्टेंट एडिटर, मेल टुडे
अर्जुन सिंह, वरिष्ठ पत्रकार, अमर उजाला

संपर्क कार्यालय : हिलमेल फाउंडेशन, 1515/जी 1-2, वजीर नगर, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली - 110003
मोबाइल - 9971161880
ई-मेल : mailtohillmail@gmail.com
वेबसाइट : www.hillmail.in

उत्तराखंड कार्यालय - हिलमेल फाउंडेशन, हाउस न. 152, गली न. 1, राजेन्द्र नगर, देहरादून
फोन : 0135-2750293

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
चेतना नेगी - बी-94, तृतीय तल, गली नम्बर 2, सेवा सदन ब्लाक, फजलपुर, मंडावली, दिल्ली - 110092 से प्रकाशित तथा मोडेस्ट पैक प्रा.लि., सी-52, डीडीए शेड्स, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1 नई दिल्ली से मुद्रित।

मोबाइल नं. : 9811985655

© सर्वाधिकार सुरक्षित

RNI REGD. **DELBIL/2016/69806**

इस अंक में

वर्ष : दो अंक : 11

सफलता के फलक पर उत्तराखंड के सितारे

17 साल पूरे कर चुके उत्तराखंड का यह चेहरा व्यक्तिगत सफलताओं की कहानी कहता है। ये कहानी उनकी है, जिन्होंने अपने पराक्रम से देश और दुनिया को विस्मित कर दिया है। ये कहानी उनकी भी है, जिनकी कार्यकुशलता की नजीरें दी जाती हैं, जिनकी मेहनत और ईमानदारी ने उन्हें सबसे ऊंचे मुकाम पर पहुंचाया है। ये उन्हें भी सलाम करती है, जो अपने हुनर से दुनिया जहां जीत रहे हैं। यह पहाड़ की तरह बुलंद हौसले, ग्लेशियरों की तरह शीतल स्वभाव और गंगा की तरह अविरल वेग की कहानी है। अपनी चमक से दुनिया को रोशन कर रहे पहाड़ के सपूतों को एक माला में पिरोने के इसी प्रयास का नाम है, **हिल-मेलः शिखर पर उत्तराखंडी 2017...**। यह विशेषांक उन विभूतियों को समर्पित है, जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन से न केवल सफलता हासिल की, बल्कि अपने-अपने क्षेत्रों में शीर्ष पर पहुंचकर दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं। यह शीर्ष 50 उत्तराखंडियों के जीवन सार का संकलन है।

उत्तराखंड के लिए यह कालखंड स्वर्णकाल सरीका है। पहाड़ के सपूत आज हर क्षेत्र में सफलता का नया शिखर छू रहे हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा का मसला हो या प्रशासनिक सेवा। चाहे सेना में शीर्ष पद हों या आंतरिक सुरक्षा अथवा खुफिया जिम्मेदारी। रेलवे हो या नागरिक उड्डयन, हर ओर उत्तराखंड का जोर नजर आता है। यही नहीं हर क्षेत्र में उत्तराखंड के बेटे-बेटियां अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाक-कान कहे जाने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल हों या उनके सचिव भास्कर खुल्बे। सेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत हों या 15वीं कोर के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल अनिल भट्ट या डीजीएमओ अनिल चौहान। कोस्ट गार्ड के प्रमुख राजेंद्र सिंह हों या रेलवे बोर्ड के चेयरमैन अश्विनी लोहानी। राज्य के नए मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत हों या पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश के मुखिया और पहाड़ के बेटे योगी आदित्यनाथ। एयर इंडिया के चेयरमैन प्रदीप सिंह खरोला हों या अंडमान निकोबार के उपराज्यपाल एडमिरल (रिटा.) डीके जोशी। उत्तराखंड में केदारनाथ के भगीरथ कहे जाने वाले कर्नल अजय कोठियाल हों या सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष प्रसून जोशी। नए दौर की आवाज जुबिन नौटियाल या मंझे हुए अभिनेता दीपक डोबरियाल या कोरियोग्राफर राघव जुयाल। जागर का जागृत स्वर बंसती देवी बिष्ट हों या प्रीतम भरतवाण। वैज्ञानिक उपलब्धियां हों या खेल का मैदान। पर्यावरण की रक्षा हो या प्राचीन विरासत की रक्षा का भागीरथ प्रयास। हर ओर, हर छोर से उत्तराखंड के किसी न किसी सपूत की सफलता की कहानी सुनने को मिलती है। पर्यावरण के क्षेत्र में सिलसिला चंडीप्रसाद भट्ट, दीप जोशी, अनिल जोशी से आगे बढ़ता है तो साहित्य में रस्किन बांड, मंगलेश डबराल जैसे नाम इसे नया आयाम देते हैं। यही नहीं साहित्य, पर्यावरण के क्षेत्र में उत्तराखंड को ऐसी अमूल्य विरासत मिली है, जो आने वाली अनेक सदियों तक मार्गदर्शन करेगी। बहरहाल, इस अंक कुछ ऐसी ही विभूतियों से पाठकों का रूबरू परिचय करवाने का प्रयास किया गया है। फेहरिस्त लंबी है, चयन करना हमेशा चुनौती रहा है। लेकिन इस अंक में उन विभूतियों से भेंट जो आज उत्तराखंड के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय लिख रहे हैं....।

- चेतना नेगी

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:28 PM Page

अजीत डोभाल राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार

रैंक

01

जून 2014 को देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किए गए अजीत डोभाल ने अब तक के अपने कार्यकाल में कई ऐसे मिशन को अंजाम दिया है, जिसकी कल्पना बहुत कम लोग ही कर पाते हैं। चाहे वह डोकलाम में चीनी सेना के साथ टकराव के बाद हालात को कूटनीतिक तरीके से नियंत्रित करने के साथ-साथ रणनीतिक तैयार करना हो, पीओके में की गई सर्जिकल स्ट्राइक हो या नोटबंदी। पठानकोट एयरबेस अटैक को न्यूट्रलाइज करना हो या फिर अंडरवर्ल्ड डॉन छोटा राजन को गिरफ्तार करना। डोभाल मोदी के हमराज रहे हैं। उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नाक, कान और आंख कहा जाता है। देश के अहम फैसलों में उनकी राय की अहमियत और खास जगहों पर उनकी मौजूदगी से यह जाहिर होता है कि वह देश के अब तक के सबसे ताकतवर एनएसए हैं। शायद यही वजह है कि पीएम ने उन्हें चीन के साथ सीमा विवाद पर बातचीत करने की अहम जिम्मेदारी सौंपी है। पीएम मोदी की तरह डोभाल भी 24 घंटे अपने काम में जुटे रहते हैं। रक्षा, आंतरिक मामले और विदेश से जुड़े अहम मुद्दे डोभाल के जिम्मे हैं। चीन सीमा विवाद सुलझाने की जिम्मेदारी मोदी सरकार ने उनके ही कंधों पर डाल रखी है। जनवरी 2005 में खुफिया ब्यूरो के प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त हुए डोभाल 1968 केरल बैच के आईपीएस अधिकारी थे। उन्होंने 33 वर्ष से अधिक समय खुफिया अधिकारी के तौर पर बिताया। 1988 में डोभाल को कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया। वह इस मेडल को प्राप्त करने वाले पहले पुलिस अधिकारी थे। इससे पहले यह सम्मान सिर्फ सैन्य कर्मियों को दिया जाता था। डोभाल का जन्म 20 जनवरी 1945 को उत्तराखंड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जिले के बानेलस्यूं पट्टी के घीड़ी गांव में हुआ। उन्होंने अजमेर मिलिट्री स्कूल से पढ़ाई की है और आगरा विवि से अर्थशास्त्र में एमएम किया। डोभाल के परिवार में उनकी पत्नी अरुणी और दो बेटे शौर्य तथा विवेक डोभाल हैं। ■

> “अजीत डोभाल देश के अब तक के सबसे ताकतवर एनएसए हैं। शायद यही वजह है कि पीएम ने उन्हें चीन के साथ सीमा विवाद पर बातचीत करने की अहम जिम्मेदारी सौंपी है। पीएम मोदी की तरह डोभाल भी २४ घंटे अपने काम में जुटे रहते हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:28 PM Page

जनरल बिपिन रावत सेना प्रमुख

सैन्य परंपरा को आगे बढ़ाने वाले उत्तराखंड के सपूतों में एक बड़ा नाम है जनरल बिपिन रावत का। वह इस समय थलसेना प्रमुख हैं। अपनी पारिवारिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए जनरल रावत इस पद पर पहुंचे। अपनी साफगोई और जमीन से जुड़े रुख के चलते वह काफी लोकप्रिय सेनाप्रमुख माने जाते हैं। पीओके में सर्जिकल स्ट्राइक, कश्मीर में आतंकवाद की कमर तोड़ने की सफल रणनीति का श्रेय तो उन्हें जाता ही है, डोकलाम में चीनी सेना से टकराव के बाद भारतीय सेना के बदले तेवरों ने भी उनकी अहमिहत साबित की है। बहुत कम समय में सेना ने डोकलाम में जिस प्रकार की तैयारी दिखाई वह चीन के लिए भी हैरान करने वाली थी। जनरल रावत जहां एक ओर सेना में महिलाओं को स्थायी तौर पर शामिल करने की बात करते हैं, वहीं वह सेना को आधुनिक बनाने की गति तेज करने की भी पुरजोर वकालत करते रहे हैं। उनके प्रयासों से पिछले एक साल में सैन्य खरीद के मामले में सरकार ने कई अहम फैसले लिए हैं। जनरल रावत का उत्तराखंड के लिए जुड़ाव भी किसी से छिपा नहीं है। चाहे वह पहाड़ी युवाओं को भर्ती में छूट का मसला हो या स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग। उन्होंने हमेशा अपनी ओर से पहल की है। उनके पिता लेफ्टिनेंट जनरल एलएस रावत सेना में डिप्टी चीफ के पद से रिटायर्ड हुए थे। वह भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून के कमांडेंट भी रहे थे।
11वीं गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में जनवरी 1979 में कमीशन लेने वाले ले. जनरल रावत का करियर उपलब्धियां भरा रहा है। वह भारतीय सैन्य अकादमी से पासआउट होने वाले बैच के श्रेष्ठतम कैडेट रहे और उन्हें स्वार्ड ऑफ ऑनर मिला। लेफ्टिनेंट जनरल बिपिन रावत अति विशिष्ट सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, सेना मेडल व विशिष्ट सेवा मेडल जैसे कई सम्मान से अलंकृत किए गए हैं। मिलिट्री मीडिया स्ट्रेटिजिक स्टडीज पर शोध के लिए उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि भी मिल चुकी है। ■

रैंक
02

“ जनरल बिपिन रावत को पीओके में सर्जिकल स्ट्राइक, कश्मीर में आतंकवाद की कमर तोड़ने की सफल रणनीति का श्रेय तो जाता ही है, डोकलाम में चीनी सेना से टकराव के बाद भारतीय सेना के बदले तेवरों ने भी उनकी अहमिहत साबित की है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:29 PM Page 6

रैंक
03

त्रिवेंद्र रावत

मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

सादगी पसंद त्रिवेंद्र सिंह रावत को जब उत्तराखंड की कमान सौंपी गई तो यह तो साफ था कि उनकी नेतृत्व क्षमता को पार्टी और संगठन हमेशा से पहचानता था। उन्होंने अपने अब तक के कार्यकाल में यह साबित भी कर दिखाया है। जनता से सीधा संवाद करने में विश्वास रखने वाले त्रिवेंद्र पौड़ी जिले के जयहरीखाल ब्लाक के खैरासैण गांव के रहने वाले हैं। यहां साल 1960 में प्रताप सिंह रावत और भोदा देवी के घर त्रिवेंद्र का जन्म हुआ। वह नौ भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं। शुरुआती पढ़ाई खैरासैण में ही हुई। त्रिवेंद्र ने कक्षा 10 की पढ़ाई पौड़ी जिले के सतपुली इंटर कॉलेज और 12वीं की पढ़ाई एकेश्वर इंटर कॉलेज से हासिल की। जयहरीखाल डिग्री कॉलेज से स्नातक और गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर से स्नातकोत्तर की डिग्री की। श्रीनगर विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में एमए करने के बाद त्रिवेंद्र 1984 में देहरादून चले गए।

देहरादून में संघ प्रचारक की भूमिका निभाने के बाद त्रिवेंद्र सिंह रावत को मेरठ का जिला प्रचारक बनाया गया। उत्तराखंड बनने के बाद 2002 में भाजपा के टिकट पर कांग्रेस के वीरेंद्र मोहन उनियाल के खिलाफ चुनाव मैदान में उतार दिया गया। 2002 में रावत ने डोईवाला से पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। 2007 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर से भाजपा ने रावत पर भरोसा जताया और वह राज्य विधानसभा पहुंचने में सफल हुए। रावत साल 2012 में अपनी परंपरागत सीट डोईवाला छोड़कर रायपुर से चुनाव लड़े, लेकिन यहां उन्हें कांग्रेस के हाथों हार का मुंह देखना पड़ा। 2017 के विधानसभा चुनाव में त्रिवेंद्र रावत एक बार फिर से डोईवाला विधानसभा से चुनावी मैदान में उतरे और हीरा सिंह बिष्ट को करारी हार दी। त्रिवेंद्र रावत की पत्नी सुनीता स्कूल टीचर हैं और उनकी दो बेटियां हैं। हाल के समय में उनकी छवि जनसरोकारी सीएम के रूप में मजबूत हुई है। ■

> जनता से सीधा संवाद करने में विश्वास रखने वाले त्रिवेंद्र सिंह रावत ने २००२ में डोईवाला से पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। २००७ के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर से भाजपा ने रावत पर भरोसा जताया और वह राज्य विधानसभा पहुंचने में सफल हुए।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:29 PM Page 7

योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

रैंक

04

यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ की छवि एक दबंग मुख्यमंत्री के रूप में उभरी है। कानून व्यवस्था पर कड़ा रूख रखने वाले योगी मूल रूप से उत्तराखंड के रहने वाले हैं। उनका असली नाम अजय सिंह बिष्ट है। योगी का जन्म 5 जून 1972 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले के यमकेश्वर ब्लॉक के एक छोटे से गांव पंचूर में हुआ। पिता आनंद सिंह बिष्ट वन विभाग से रेंजर के पद से रिटायर हुए और आज भी पत्नी सावित्री देवी के साथ गांव में रहते हैं। योगी चार भाई और तीन बहनों में दूसरे नंबर के भाई हैं। उनके दो भाई कॉलेज में नौकरी करते हैं, जबकि एक भाई सेना की गढ़वाल रेजीमेंट में सूबेदार हैं।

योगी ने अपनी शुरूआती शिक्षा गांव से ली। इसके बाद ऋषिकेश से आगे की पढ़ाई की। इसके बाद गढ़वाल विश्विद्यालय के तहत आने वाले कोटद्वार कॉलेज से गणित में बीएससी किया। योगी ने इसके बाद घर छोड़ दिया था और गोरखपुर मंदिर में दीक्षा ली। वह गोरखपुर के प्रसिद्ध गोरखनाथ मंदिर के महंत हैं। आदित्यनाथ गोरखनाथ मंदिर के पूर्व महंत अवैद्यनाथ के उत्तराधिकारी हैं, वो हिंदू युवा वाहिनी के संस्थापक भी हैं, जो हिंदू युवाओं का सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी समूह है। योगी आदित्यनाथ ने 1998 से लगातार संसद में गोरखपुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वह 2014 में पांचवी बार सांसद बने। योगी के गुरु अवैद्यनाथ ने 1998 में राजनीति से संन्यास लिया और योगी आदित्यनाथ को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। 1998 में गोरखपुर से 12वीं लोकसभा का चुनाव जीतकर योगी आदित्यनाथ संसद पहुंचे तो वह सबसे कम उम्र के सांसद थे, वो 26 साल की उम्र में पहली बार सांसद बने।

योगी के घर में आज भी उनकी यादें हर कोने में बसी हुई हैं। योगी को तस्वीर खिंचवाने का शौक था। उनकी अलमारी में बचपन और गोरखनाथ मठ में दीक्षा की तस्वीरें भी वहां रखी हुई हैं। ■

> योगी आदित्यनाथ ने 1998 से लगातार संसद में गोरखपुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वह २014 में पांचवी बार सांसद बने। योगी के गुरु अवैद्यनाथ ने 1998 में राजनीति से संन्यास लिया और योगी आदित्यनाथ को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:29 PM Page

रैंक
05

भास्कर खुल्बे सचिव, पीएमओ

कुमाऊं के लाल भास्कर खुल्बे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टीम का अहम हिस्सा हैं। भास्कर खुल्बे पश्चिम बंगाल कैडर के आईएएस अधिकारी हैं। लंबे समय तक अलग-अलग पदों पर रहने के बाद 2014 में उन्हें पीएमओ में नियुक्ति मिली। वह इस समय प्रधानमंत्री के सचिव हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पद संभालने के बाद बेहद ईमानदार और मेहनती छवि रखने वाले भास्कर को अपनी टीम में चुना। युवाओं को लेकर नीतियां बनाने में उनका अहम योगदान रहता है। उन्हें एक बेहतरीन टॉस्क मास्टर माना जाता है। भास्कर खुल्बे के बारे में कहा जाता है कि वह जिस जिम्मेदारी को लेते हैं, उसे तब तक फॉलो करते हैं, जब तक वह धरातल पर दिखने न लगे। हाल ही में उनकी यह खासियत देहरादून में हुए रैबार-2017 के दौरान देखने को मिली। उन्होंने इस सम्मेलन में युवाओं के कौशल विकास को लेकर जिलेवार रणनीति तैयार करने का सुझाव दिया था। एक महीने बाद ही उनके निर्देश पर बड़े अधिकारी राज्य सरकार के साथ मिलकर इस संबंध में विजन का खाका खींचने देहरादून पहुंच गए। खुल्बे पहाड़ की संस्कृति के भी बेहत करीब हैं।

1983 बैच के आईएएस भास्कर को बंगाल कैडर मिला। उन्होंने वेस्ट बंगाल फिशरीज कॉरपोरेशन का भी दायित्व संभाला। इसके बाद उन्हें डिपार्टमेंट ऑफ पर्सनेल (डीओपी) में तैनाती मिली। बाद में वह पश्चिम बंगाल के रेजीडेंट कमिश्नर के रूप में दिल्ली में कार्यरत रहे। वर्ष 2001 में उन्हें ब्रूसेल्स में भारतीय दूतावास में सलाहकार भी बनाया गया था। मूलतः तल्लीताल, नैनीताल निवासी भास्कर खुल्बे की शिक्षा-दीक्षा नैनीताल से हुई। 1980 में उन्होंने कुमाऊं विवि के डीएसबी परिसर से बीएससी किया। वह जूलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। उनकी पत्नी मीता खुल्बे इंडियन ऑर्डिनेंस फैक्ट्री सर्विसेज में रही हैं। बाद में पारिवारिक कारणों से उन्होंने वीआरएस ले लिया। ■

> प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पद संभालने के बाद बेहद ईमानदार और मेहनती छवि रखने वाले भास्कर को अपनी टीम में चुना। युवाओं को लेकर नीतियां बनाने में उनका अहम योगदान रहता है। उन्हें एक बेहतरीन टॉस्क मास्टर माना जाता है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:29 PM Page

कर्नल अजय कोठियाल प्रिंसिपल, निम

उत्तराखंड और पर्वतारोहण की दुनिया में अब यह नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। कर्नल अजय कोठियाल की अगुवाई में आपदा के बाद चलाया गया केदारनाथ के पुनर्निर्माण का कार्य कई लोगों के लिए प्रेरणा बन चुका है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें केदारनाथ के दिव्य और भव्य स्वरूप को साकार करने की जिम्मेदारी दी है। यह कर्नल कोठियाल की प्रेरणा है कि जब केदारनाथ घाटी बर्फ से ढक चुकी है, वहां हर समय काम चल रहा है। हर चुनौती का सामना शांति और सलीके से करने का हुनर उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। चाहे वह सैन्य मोर्चे पर दुश्मनों के कुटिल इरादों को नाकाम करना हो या फिर आपदा पीड़ित उत्तराखंड में राहत और पुनर्वास का काम। उन्हें सेना में बेहतरीन सेवाओं और अदम्य साहस के लिए कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र और विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया जा चुका है। इस समय कर्नल कोठियाल नेहरू पर्वतारोहण संस्थान (निम) के प्रिंसिपल हैं। उत्तराखंड के युवाओं के जोश और जज्बे को सही दिशा में ले जाने के लिए कर्नल कोठियाल ने यूथ फाउंडेशन की स्थापना की। यह फाउंडेशन पहाड़ी युवाओं को सैन्य भर्ती के लिए प्रशिक्षण देता है। इसके बदले कोई शुल्क नहीं ली जाती। अब तक सैकड़ों युवा यूथ फाउंडेशन से ट्रेनिंग लेकर सेना में भर्ती हो चुके हैं। यही नहीं अब वह लड़कियों को भी सेना, अर्धसैनिक बल और पुलिस में भर्ती होने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। सेना में यह उनका शानदार सेवाकाल ही है कि उनके नाम पर सैन्य युद्ध प्रशिक्षण केंद्र मऊ में मेजर अजय कोठियाल नाम से एक स्कवाड पोस्ट भी है। कर्नल कोठियाल ने 7 दिसंबर 1992 को भारतीय सेना में गढ़वाल राइफल्स की चौथी बटालियन में बतौर सेकेंड लेफ्टिनेंट सैन्य जीवन की शुरूआत की। कर्नल कोठियाल का जन्म 26 फरवरी 1969 को हुआ था। वर्ष 2001 में सेना ने पहली बार माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा लहराया। इसके लिए तत्कालीन मेजर अजय कोठियाल को शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। ■

रैंक
06

"सेना में यह उनका शानदार सेवाकाल ही है कि उनके नाम पर सैन्य युद्ध प्रशिक्षण केंद्र मऊ में मेजर अजय कोठियाल नाम से एक स्कवाड पोस्ट भी है। कर्नल कोठियाल ने 7 दिसंबर 1992 को भारतीय सेना में गढ़वाल राइफल्स की चौथी बटालियन में बतौर सेकेंड लेफ्टिनेंट सैन्य जीवन की शुरूआत की।

राजेंद्र सिंह महानिदेशक, कोस्टगार्ड

रैंक
07

समुद्री सीमा की निगहबानी की कमान इस समय उत्तराखंड के सपूत राजेंद्र सिंह के हाथ में है। वह भारतीय तटरक्षक बल के महानिदेशक हैं। राजेंद्र सिंह इस रणनीतिक बल के शीर्ष पद को सुशोभित करने वाले तटरक्षक बल के पहले अधिकारी हैं। अभी तक नौसेना के थ्री स्टार अधिकारी को यह पद दिया जाता था। राजेंद्र सिंह ने अपने कार्यकाल में तटरक्षक बल के संचालन में कई बड़े बदलाव किए हैं। बल का बेड़ा लगातार बड़ा होता जा रहा है। राजेंद्र सिंह तटरक्षक बल की विकास यात्रा के साक्षी रहे हैं। उन्होंने बल को इसका प्रोफेशनल स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वह तटरक्षक बल में शामिल हर तरह के पोतों के कमांडर रहे हैं। अस्सी के दशक में राजेंद्र सिंह ने तस्कर विरोधी अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके नाम तस्करी का सामान जब्त करने का कीर्तिमान है। इसके लिए उन्हें 15 अगस्त, 1990 को राष्ट्रपति द्वारा तटरक्षक पदक से सम्मानित किया गया। अन्य नियुक्तियों के अलावा वह महानिरीक्षक के रूप में भारतीय समुद्र तट के पूरे पूर्वी तट एवं पश्चिमी तट की कमान संभाल चुके हैं। सरकार ने 15 अगस्त 2007 को उन्हें राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया।

देहरादून निवासी राजेंद्र सिंह 1980 में तटरक्षक बल में शामिल हुए। राजेंद्र सिंह की प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा मसूरी और देहरादून से हुई है। हाल ही उनके प्रयासों से देहरादून में तटरक्षक बल भर्ती केंद्र खुलने का रास्ता साफ हुआ है। इससे पहले, 2013 में राज्य में आई भीषण आपदा के बाद उन इलाकों में गरीबी और बेराजगारी दूर करने के लिए उन्होंने दूरदराज के नौजवानों को तटरक्षक बल में रोजगार देने के लिए वहां भर्ती रैली का आयोजन किया। इसके अलावा भी वह कई अन्य गतिविधियों के जरिए उत्तराखंड से जुड़े हुए हैं। राजेन्द्र सिंह के परिवार में उनकी पत्नी उर्मिला सिंह और दो पुत्रियां हैं। ■

> “ राजेंद्र सिंह तटरक्षक बल में शामिल हर तरह के पोतों के कमांडर रहे हैं। अस्सी के दशक में उन्होंने तस्कर विरोधी अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। इसके लिए उन्हें 15 अगस्त, 1990 को राष्ट्रपति द्वारा तटरक्षक पदक से सम्मानित किया गया।

अश्विनी लोहानी चेयरमैन, रेलवे बोर्ड

अश्विनी लोहानी के शब्दकोश में लगन, मेहनत, कार्य कुशलता और रिकार्ड जैसे शब्दों की भरमार है। लोहानी की यूएसपी यानी यूनिक सेलिंग पॉइंट है, उनका टाइम मैनेजमेंट। लोहानी को रेलवे बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है। लोहानी सादगी पसंद व्यक्ति हैं। वह सरकारी तामझाम में यकीन नहीं करते। इसीलिए जब उन्हें रेलवे बोर्ड का मुखिया बनाया गया तो उन्होंने सबसे पहला आदेश वरिष्ठ अधिकारियों के कमरों से नेम प्लेट हटाने का दिया। यही नहीं उनकी पहल पर रेलवे ने 36 साल पुराने प्रोटोकॉल को भी खत्म कर दिया, जिसके तहत रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और बोर्ड के सदस्यों के जोनल विजिट के दौरान जनरल मैनेजरों को उनके आने तथा जाने के समय मौजूद रहना पड़ता था। साथ ही उन्होंने रेलवे स्टाफ से घरेलू कामकाज कराने पर भी रोक लगा दी है। इससे पहले, उन्हें केंद्र ने एयर इंडिया का चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक यानी सीएमडी बनाया था। किताब लिखने और पढ़ने के शौकीन लोहानी को विश्व के सबसे पुराने भाप लोकोमोटिव इंजन फेयरीक्वीन को भीफिर से पटरी पर लाने का श्रेय जाता है। कुछ साल पहले मध्य प्रदेश टूरिज्म कॉरपोरेशन की कमान प्रबंध निदेशक के तौर पर लोहानी को सौंपी गई थी। उस वक्त राज्य का पर्यटन देश के नक्शे में काफी पीछे था। या यूं कहें कि धार्मिक स्थलों के अलावा पर्यटन के नाम पर कुछ नहीं था। लोहानी ने नए डेस्टीनेशन विकसित किए और पर्यटन के बारे में पर्यटकों को जागरूक किया। कुछ ही सालों में प्रदेश पर्यटन के नक्शे में आ गया। उन्होंने 'स्मोकिंग ब्यूटिस' और 'विनिंग एट वर्क अगेंस्ट आल ऑड्स' नाम की दो पुस्तकें लिखी हैं। उत्तराखंड के लोहानी ने कानपुर में इंटर की पढ़ाई के बाद मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल और टेलीकम्युनिकेशन में डिग्री हासिल कर लिम्का बुक में अपना नाम दर्ज कराया। लोहानी उस समय सुर्खियों में आए, जब उन्होंने आईटीडीसी में अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का पद संभाला और मुंबई के सेंटूर होटल या फिर कोई अन्य होटल, सभी को घाटे से उबार लिया। ■

रैंक
08

"लोहानी को हाल ही में रेलवे बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है। लोहानी सादगी पसंद व्यक्ति हैं। वह सरकारी तामझाम में यकीन नहीं करते। जब उन्हें रेलवे बोर्ड का मुखिया बनाया गया तो उन्होंने सबसे पहला आदेश वरिष्ठ अधिकारियों के कमरों से नेम प्लेट हटाने का दिया।

अनिल कुमार धस्माना सचिव, रॉ

रैंक
09

मध्य प्रदेश कैडर के 1981 बैच के आईपीएस अधिकारी एके धस्माना इस समय रिसर्च एवं एनालिसिस विंग (रॉ) के सचिव हैं। उनकी नियुक्ति दो साल के लिए हुई है। धस्माना को आतंकवाद व इस्लामिक मामलों का जानकार माना जाता है। उन्हें पाकिस्तान और अफगानिस्तान पर विशाल अनुभव हासिल है।

धस्माना ने लंदन व फ्रैंकफर्ट सहित कई प्रमुख राजधानियों में काम किया है। उन्होंने यूरोप और सार्क डेस्क को भी संभाला है। वह 1993 में रॉ से जुड़े। इस समय प्रधानमंत्री मोदी और एनएसए अजीत डोभाल की योजना पर काम कर रहे हैं, ऐसे में धस्माना एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। दो अक्टूबर 1957 को जन्मे धस्माना कॉमर्स में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। पौड़ी जिले के जहरीखाल ब्लॉक के तोली गांव के महेश चंद्र धस्माना के पुत्र अनिल का पैतृक गांव है। उनकी ससुराल देहरादून में है।

धस्माना बिना किसी दबाव के निष्पक्ष कार्रवाई करने वाले अधिकारी रहे हैं। धस्माना ने बतौर इंदौर एसपी ऑपरेशन बांबे बाजार जैसा साहसिक कारनामा अंजाम दिया था। यह कार्रवाई बाला बेग जैसे कुख्यात गुंडे के आतंक को खत्म करने के लिए की गई थी।

धस्माना ने इस आगे से लीड किया। इससे उनकी छवि मजबूत अफसर के रूप में बनी। उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकर अजीत डोभाल का काफी करीबी और विश्वासपात्र माना जाता है। अनिल कुमार धस्माना को गांव की माटी से विशेष लगाव है। बेहद मिलनसार धस्माना शादी-ब्याह समारोहों के अलावा कुल देवता की पूजा में शामिल होने गांव आते रहते हैं। ■

> अनिल धस्माना को आतंकवाद व इस्लामिक मामलों का जानकार माना जाता है। उन्हें पाकिस्तान और अफगानिस्तान पर विशाल अनुभव हासिल है। धस्माना ने लंदन व फ्रैंकफर्ट सहित कई प्रमुख राजधानियों में काम किया है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:30 PM Page

प्रसून जोशी सेंसर बोर्ड प्रमुख

अल्मोड़ा में जन्में प्रसून जोशी की शख्सियत को एक शब्द में बयां करना हो तो हरफनमौला सबसे सटीक शब्द होगा। एक बेहतरीन कवि, लेखक, पटकथा लेखक, मशहूर गीतकार, सुपरहिट एडगुरू और सबसे खास एक बेहतरीन वक्ता। बेहत संयत और शब्दों के जादूगर। उनकी कलम से निकली रचनात्मकता ने हमेशा समाज को दिशा देने का काम किया है। मां-बेटे, पिता-पुत्र के संबंधों को शब्दों की जिस शिल्प से उन्होंने रचा है, वह सीधे दिल में उतर जाती है। वह इस समय केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के अध्यक्ष हैं। प्रसून उस बदलते भारत के लेखक हैं जिसे उनके गीत और कविताएं नई राह दिखा सकती हैं। उनके गीतों और कविताओं में गुस्सा, उम्मीद, उत्साह और बनते बिगड़ते सपने सबकुछ हैं। रियो ओलंपिक में पीवी सिंधु, साक्षी मलिक और कर्माकर के शानदार प्रदर्शन पर कविता के रूप में निकले उनके जज्बातों को भला कौन भुला सकता है। समाज के रवैये पर तीखी टिप्पणी करते हुए उन्होंने लिखा, ...शर्म आ रही है ना, उस समाज को जिसने उसके जन्म पर खुल के जश्न नहीं मनाया। शर्म आ रही है ना, उस पिता को उसके होने पर जिसने एक दीया कम जलाया...। 2015 में भारत सरकार ने कला, साहित्य एवं विज्ञापन के क्षेत्र में शानदार योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया। 17 साल की उम्र में ही युवा प्रसून की पहली किताब 'मैं और वो' प्रकाशित हुई। गीतकार के तौर पर उन्हें पहला ब्रेक राजकुमार संतोषी की फिल्म लज्जा से मिला। उन्होंने अवार्ड जीतने वाली फिल्म भाग मिल्खा भाग की स्क्रिप्ट भी लिखी। फिल्म तारे जमीन पर के गाने मां के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 2013 में चटगांव के लिए भी उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यही नहीं, तीन बार वह सर्वश्रेष्ठ गीतकार का फिल्मफेयर पुरस्कार जीतने में कामयाब हुए। विज्ञापन जगत में भी आज उनकी अलग पहचान है। अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन कंपनी मैक्केन इरिक्सन के वह चेयरमैन-एशिया पैसिफिक हैं। ■

रैंक 10

> प्रसून जोशी इस समय केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के अध्यक्ष हैं। निर्भीक और निर्विवाद जैसे शब्द उनकी शख्सियत को सुशोभित करते हैं। वह इस बदलते भारत के लेखक हैं जिसे उनके गीत और कविताएं नई राह दिखा सकती हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:30 PM Page

ले. ज. अनिल भट्ट कोर कमांडर 15वीं कोर

रैंक

11

देश की रक्षा सुरक्षा की बागडोर संभाल रहे पहाड़ के सपूतों में एक और चर्चित नाम है लेफ्टिनेंट जनरल अनिल कुमार भट्ट का। हाल ही में सरकार ने उन्हें सामरिक रूप से अहम श्रीनगर स्थित 15वीं कोर का कमांडर नियुक्त किया है। अभी तक लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट महानिदेशालय सैन्य अभियान (डीजीएमओ) का जिम्मा संभाल रहे थे।

गत वर्ष नवंबर के बाद से सेना की ओर से किए गए सभी ऑपरेशन जनरल भट्ट की निगरानी में हुए। वह 15वीं कोर के 47वें कोर कमांडर हैं। जम्मू कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ सफल अभियान के बाद डीजीएमओ रहने के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट ने खुद को चीनी मोर्चे पर भी साबित करके दिखाया। उन्होंने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चौबीसों घंटे नजर रखी। सेना को चीन की घुसपैठ से निपटने के लिए तैयार रखा। उनके महानिदेशालय में बने सेना के वॉर रूम से कई बार शीर्ष नेतृत्व को हालात से अवगत कराया गया। इतने कम समय में भारतीय सेना की तैयारी देख चीन भी हैरान था। लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट की तत्परता की बदौलत भारत ने ने बहुत कम समय में सीमा पर सेना की संख्या बढ़ा दी थी।

लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट मूल रूप से टिहरी गढ़वाल के कीर्तिनगर ब्लॉक के खतवाड़ गांव निवासी हैं। उनका परिवार पिछले पांच दशक से अधिक समय से मसूरी में रह रहा है। भट्ट ने प्रारंभिक शिक्षा मसूरी के हेंपटनकोर्ट और 12वीं तक की पढ़ाई प्रतिष्ठित सेंट जार्ज कॉलेज में की है। एके भट्ट के पिता सत्यप्रसाद भट्ट ने भी कई वर्षों तक फौज में रहकर देश की सेवा की। उनके बहनोई एसए बडोला भी मर्चेंट नेवी में हैं। लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट बचपन से ही मेधावी थे। देश सेवा की ललक उनमें स्कूल के दिनों से ही थी। एके भट्ट मसूरी में बेहद लोकप्रिय क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में भी जाने जाते हैं। लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट ने 9 गोरखा रेजीमेंट में कमीशन लिया था। ■

> लेफ्टिनेंट जनरल अनिल कुमार भट्ट को सरकार ने सामरिक रूप से अहम श्रीनगर स्थित 15वीं कोर का कमांडर नियुक्त किया है। अभी तक लेफ्टिनेंट जनरल भट्ट महानिदेशालय सैन्य अभियान (डीजीएमओ) का जिम्मा संभाल रहे थे। हाल ही में सेना की ओर से किए गए सभी ऑपरेशन जनरल भट्ट की निगरानी में हुए।

आलोक जोशी चेयरमैन, एन.टी.आर.ओ.

खुफिया एजेंसी रॉ के पूर्व प्रमुख आलोक जोशी को 7 जनवरी 2015 को राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन (एनटीआरओ) का सलाहकार बनाया गया। बाद में वह इसके प्रमुख बने। जोशी अभी इस जिम्मेदारी को संभाल रहे हैं। 1976 बैच के हरियाणा कैडर के आईपीएस अधिकारी आलोक जोशी की शुरूआती शिक्षा दीक्षा लखनऊ से हुई। इसके बाद उन्होंने जवाहर लाल यूनिवर्सिटी दिल्ली से अपनी ग्रेजुएशन पूरी की। दिल्ली के हिंदू कॉलेज से राजनीतिक शास्त्र में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद वह भारतीय पुलिस सेवा के लिए चुने गए। इसके बाद लगातार सफलता की सीढ़ियां चढ़ते हुए वह 2005 में खुफिया ब्यूरो में ज्वाइंट डायरेक्टर बने। 2010 में उन्हें खुफिया एजेंसी रॉ का विशेष सचिव बनाया गया। इसके बाद वह 30 दिसंबर 2012 को इसके प्रमुख बने। वह 31 दिसंबर 2014 तक इस पद पर रहे। सेवानिवृत्ति के बाद केंद्र की मोदी सरकार ने उन्हें बतौर सलाहकार एनटीआरओ से जोड़ा। बहुत ही लो प्रोफाइल रहने वाले आलोक जोशी को अपनी खुफिया पकड़ के लिए जाना जाता है। जोशी ने 1976 से 1978 तक सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद से प्रशिक्षण हासिल करने के बाद पहली नियुक्ति 1978 में गुड़गांव में बतौर एएसपी (प्रशिक्षण) पाई। वह अंबाला रेंज के आईजी भी रहे। यह आलोक जोशी का उत्तराखंड के लिए अपार स्नेह है कि उनके प्रयासों से अगले कुछ महीने में राजधानी देहरादून में एनटीआरओ का साइबर सुरक्षा केंद्र काम करने लगेगा। इसमें एनटीआरओ 25 बच्चों को साइबर सुरक्षा से संबंधित प्रशिक्षण देगा। इन बच्चों को दो साल तक स्टाइपेंड भी दिया जाएगा। एनटीआरओ की देहरादून में एक ड्रोन एप्लीकेशन सेंटर खोलने की तैयारी है। इससे राज्य को पर्यावरण, पर्यटन और सुरक्षा से संबंधित मसलों में मदद मिलने की संभावना है। हाल ही में देहरादून में हुए रैबार कार्यक्रम में आलोक जोशी ने कहा था कि देश को इस समय 5 लाख से ज्यादा साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट की जरूरत है। ■

रैंक 12

> "२००५ में खुफिया ब्यूरो में ज्वाइंट डायरेक्टर बने। २०१० में उन्हें खुफिया एजेंसी रॉ का विशेष सचिव बनाया गया। इसके बाद वह ३० दिसंबर २०१२ को इसके प्रमुख बने। वह ३१ दिसंबर २०१४ तक इस पद पर रहे। सेवानिवृति के बाद मोदी सरकार ने उन्हें बतौर सलाहकार एनटीआर से जोड़ा।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:31 PM Page

रैंक
13

एडमिरल (रिटा.) डीके जोशी

पूर्व नौसेना प्रमुख एवं राज्यपाल, अंडमान निकोबार

अपनी सादगी के लिए विख्यात नौसेना के पूर्व अध्यक्ष एडमिरल (रिटा.) देवेंद्र कुमार जोशी इस समय केंद्र शासित प्रदेश अंडमान निकोबार के उपराज्यपाल हैं। इससे पहले केंद्र ने उनके अनुभव को देखते हुए उन्हें आइसलैंड डेवलपमेंट एजेंसी का उपाध्यक्ष बनाया था। एडमिरल जोशी को अंडमान निकोबार में बड़ी जिम्मेदारी देने को हिंद महासागर में भारतीय सेना के रणनीतिक महत्व से जोड़कर देखा जा रहा है। एडमिरल जोशी को जब यह जिम्मा सौंपा गया तो उस समय वह रानीखेत में थे। खास बात यह है कि इतनी अहम जिम्मेदारी संभालने के लिए भी वह अपनी कार खुद ड्राइव करते हुए दिल्ली पहुंचे। उन्होंने प्रशासन को भी किसी तरह का एस्कॉर्ट देने से मना कर दिया। इस तरह उन्होंने एक तरफ वीआईपी कल्चर न छोड़ने वाले नेताओं, अफसरों और रसूखदारों के सामने उदाहरण रखा तथा दूसरी तरफ यह भी साबित किया कि क्यों पीएम मोदी का उत्तराखंड के सपूतों पर भरोसा इतना मजबूत है।

एडमिरल जोशी ने 31 अगस्त, 2012 को भारत के 19वें नौसेना प्रमुख का पद ग्रहण किया था। एंटी सबमरीन वारफेयर में महारत रखने वाले एडमिरल जोशी ने अपने कार्यकाल के दौरान नैतिकता का सर्वोच्च उदाहरण पेश करते हुए अपने कार्यकाल के दौरान हुए कुछ हादसों की जिम्मेदारी ली और 26 फरवरी 2014 को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वह पहले नौसेना प्रमुख रहे जिन्होंने समय से पहले अपने पद से इस्तीफा दिया। उन्होंने जो मुख्य ज़िम्मेदारियां निभाईं उनमें गाइडेड मिसाइल वाले युद्धपोत आईएनएस कुठार, गाइडेड मिसाइल विध्वंसक पोत रणवीर और विमानवाहक पोत आईएनएस विराट का नियंत्रण शामिल था। इस दौरान उन्हें नौसेना पदक, विशिष्ट सेवा पदक और युद्ध सेवा पदक से भी सम्मानित किया गया। ■

> एडमिरल जोशी ने 31 अगस्त, २०१२ को भारत के 19वें नौसेना प्रमुख का पद ग्रहण किया था। एंटी सबमरीन वारफेयर में महारत रखने वाले एडमिरल जोशी ने अपने कार्यकाल के दौरान नैतिकता का सर्वोच्च उदाहरण पेश करते हुए अपने कार्यकाल के दौरान हुए कुछ हादसों की जिम्मेदारी ली।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:31 PM Page

श्रीमती बसंती बिष्ट

जागर गायिका

रैंक

14

बसंती बिष्ट ने उत्तराखंड के जागर गायन को न सिर्फ नए आयाम दिए, बल्कि पुरुष एकाधिकार वाले जागर गायन क्षेत्र की तमाम वर्जनाओं को तोड़कर आकाशवाणी, दूरदर्शन और विभिन्न मंचों पर पहुंचकर एक ऐसा मुकाम भी हासिल किया, जो आज एक नजीर बन गया है। वर्तमान में वे देहरादून में रह रही हैं और विभिन्न मंचों पर जागर की प्रस्तुति देकर पहाड़ की संस्कृति के संवर्द्धन में जुटी हुई हैं। इस वर्ष जनवरी में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। बसंती बिष्ट ने मां नंदा के जागर को स्वरचित पुस्तक 'नंदा के जागर- सुफल ह्वे जायां तुम्हारी जात्रा' में संजोया है। गांव और पहाड़ में महिलाओं के मंच पर जागर गाने की परंपरा नहीं थी। मां ने उन्हें सिखाया था लेकिन बाकी कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। वह गीत-संगीत में तो रुचि लेतीं लेकिन मंच पर जाकर गाने की उनकी हसरत सामाजिक वर्जनाओं के चलते पूरी नहीं हो सकी। शादी के बाद जब पति ने उन्हें गुनगुनाते हुए सुना तो विधिवत रूप से सीखने की सलाह दी। पहले तो बसंती तैयार नहीं हुई लेकिन पति के जोर देने पर उन्होंने सीखने का फैसला किया। बसंती देवी बिष्ट की शादी 15 वर्ष की उम्र में हो गई थी। कुछ वर्ष तक वे अपनी ससुराल में रहकर घास-पानी और खेत खलिहान के कार्य करती रहीं और बाद में अपने पति के साथ पंजाब चली गई, जो सेना में नौकरी करते थे। पंजाब में उन्होंने प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ में एडमिशन ले लिया और पांच वर्ष तक संगीत की बारीकियां सीखी। बाद में वे देहरादून आ गईं और परिवार की जिम्मेदारियां निभाने लगीं। देहरादून में किसी ने उन्हें आकाशवाणी जाने की सलाह दी। आकाशवाणी में उन्होंने जागर गायन का प्राथमिकता दी। बसंती बिष्ट अब तक तमाम मंचों पर एक हजार से अधिक प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। बसंती बिष्ट का जन्म चमोली जनपद के ल्वाणी गांव में 14 जनवरी, 1953 को हुआ। ■

> पंजाब में उन्होंने प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ में एडमिशन ले लिया और पांच वर्ष तक संगीत की बारीकियां सीखी। बाद में वे देहरादून आ गईं। देहरादून में किसी ने उन्हें आकाशवाणी जाने की सलाह दी। आकाशवाणी में उन्होंने जागर गायन का प्राथमिकता दी।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:31 PM Page

अनिल बलूनी

मीडिया हेड, बीजेपी

रैंक

15

भाजपा अनिल बलूनी इस समय केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा के मीडिया विभाग के प्रमुख हैं। उन्हें पीएम मोदी और पार्टी प्रमुख अमित शाह का विश्वस्त माना जाता है। 45 वर्षीय बलूनी भाजपा में 1993 से सक्रिय हैं। बलूनी मीडिया में होने वाली बहसों में भाजपा का पक्ष आक्रामकता और प्रखरता से रखने के लिए जाने जाते हैं। पौड़ी गढ़वाल के रहने वाले बलूनी पहले उत्तराखंड भाजपा के प्रवक्ता रहे। 2014 में उन्हें दिल्ली में लाया गया और भाजपा प्रवक्ता की जिम्मेदारी दी गई। वह उत्तराखंड राज्य वन एवं पर्यावरण कमेटी के उपाध्यक्ष रहे हैं। प्रकृति प्रेमी बलूनी की उत्तराखंड की वनस्पति और जीवों पर काफी पकड़ है। उनका खुद का कहना है कि पहाड़ी होने के नाते जंगलों से होते हुए पहाड़ों पर चढ़ना हमारे जीवन का हिस्सा है। बलूनी का भाजपा से जुड़ाव स्कूल के दिनों से रहा है। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा के दौरान एबीवीपी से जुड़े। कॉमर्स के छात्र रहे बलूनी ने पत्रकारिता में भी डिप्लोमा किया है। पत्रकारिता की पढ़ाई के दौरान उनका संघ कार्यालय में काफी आनाजाना हुआ। इसी दौरान वह संघ के बड़े नेता सुंदर सिंह भंडारी के संपर्क में आए। जब भंडारी बतौर राज्यपाल पटना गए तो बलूनी उनके ओएसडी बनाए गए। इसके बाद भंडारी उन्हें अपने साथ गुजरात राजभवन भी ले गए। इसके दो साल बाद बतौर सीएम गुजरात में नरेंद्र मोदी का दौर शुरू हुआ। इसके बाद बलूनी 2002 में वह देहरादून लौट गए। वर्ष 2002 में उन्होंने पौड़ी की कोटद्वार विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा। तब उनकी उम्र महज 26 साल थी। कॉलेज से टहलते-टहलते पत्रकारिता में आ गए और पत्रकारिता से टहलते हुए राजनीति में जा पहुंचे, वह भी सिर्फ 26 साल की उम्र में। अब उनकी उम्र करीब 45 साल है। लेकिन वह राजनीति का लंबा सफर तय कर चुके हैं। सबसे अहम बात है कि वह नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी के करीब हैं। ■

> अनिल बलूनी पीएम मोदी और पार्टी प्रमुख अमित शाह का विश्वस्त माना जाता है। 45 वर्षीय बलूनी भाजपा में 1993 से सक्रिय हैं। बलूनी मीडिया में होने वाली बहसों में भाजपा का पक्ष आक्रामकता और प्रखरता से रखने के लिए जाने जाते हैं। पौड़ी गढ़वाल के रहने वाले बलूनी पहले उत्तराखंड भाजपा के प्रवक्ता रहे हैं।

बीसी त्रिपाठी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, गेल

बीसी त्रिपाठी गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (गेल इंडिया) के पहली अगस्त 2009 से चेयममैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) हैं। उन्होंने महाराष्ट्र के इलेक्ट्रोमेल्ट लिमिटेड में पर्सनल एवं एडमिनिस्ट्रेशन में बतौर जनरल मैनेजर अपनी सेवाएं दी हैं। वह छह जुलाई 2007 से 31 जुलाई 2009 तक गेल के मार्केटिंग डायरेक्टर रहे। उन्होंने ऑयल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन से अपना कॅरियर प्रारंभ किया और वर्ष 1984 में गेल से जुड़े। उस समय गैस उद्योग अपनी शैशव अवस्था में ही था। त्रिपाठी गेल के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। वह गेल की प्रतिष्ठित परियोजना दाहेज-विजयपुर के प्रबंधक भी रहे। इसे परियोजना प्रबंधन में उत्कृष्टता के लिए इंटरनेशनल प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएशन से रजत पदक मिला है। इस परियोजना पर एक केस स्टडी पेट्रोमिन पाइपलाइनर में भी प्रकाशित हुई है।

त्रिपाठी के पास प्रोजेक्ट प्लानिंग, प्रबंधन एवं एक्जीक्यूशन, संचालन एवं रखरखाव और मार्केटिंग का करीब 30 साल का तजुर्बा है। बीसी त्रिपाठी ने एनआईटी इलाहाबाद से 1982 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन किया था। इस वर्ष 12 अप्रैल 2017 को बी सी त्रिपाठी ने एचटी मीडिया लिमिटेड द्वारा आयोजित हिंदुस्तान रत्नर पीएसयू अवार्ड के दौरान सबसे तेजी से बढ़ते वाले महारत्न पीएसयू का पुरस्कार हासिल किया। इससे पहले, 20 दिसंबर, 2013 में त्रिपाठी को पेरिस में आयोजित 14वें विश्व एलएनजी सम्मेनलन में प्रतिष्ठित 'बेस्टर एलएनजी एक्जीक्यूटिव ग्लोबल अवार्ड' से सम्मानित किया गया। त्रिपाठी को यह सम्मान वैश्विक एलएनजी उद्योग में उत्कीष्टत योगदान और एलएनजी सोर्सिंग के लिए कंपनी द्वारा हासिल की गई ऐतिहासिक उपलब्धि और उत्कृष्ट नेतृत्व कौशल से गेल को आगे ले जाने के लिए प्रदान किया गया था। ■

रैंक
16

"बीसी त्रिपाठी ने ऑयल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन से अपना कॅरियर प्रारंभ किया और 1984 में गेल से जुड़े। वह गेल की प्रतिष्ठित परियोजना दाहेज-विजयपुर के प्रबंधक भी रहे। इसे परियोजना प्रबंधन में उत्कृष्टता के लिए इंटरनेशनल प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएशन से रजत पदक मिला है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:32 PM Page

नरेंद्र सिंह नेगी लोक गायक

रैंक 17

उत्तराखंड के खेतों-खलिहानों, जंगलों में घास-लकड़ी लेने अथवा मवेशियों के साथ गई घसेरियों और ग्वैरों, पानी के स्रोत धारा-मंगरों, शादी-विवाह अथवा धार्मिक कार्यक्रमों, घरों और देवालयों अर्थात यत्र-तत्र सर्वत्र यदि कोई एक चीज मौजूद है तो वह है नरेंद्र सिंह नेगी की आवाज। पर्वतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो जिस पर नेगी की नजर न पड़ी हो और जिस पर उन्होंने गीत की रचना कर उसे अपना मधुर कंठ न दिया हो। शुरूआती दौर में नेगी ने गढ़वाली गीत माला के नाम से एकल गीतों के एलबम निकाले। गढ़वाली गीतमाला के 10 भाग निकले। बाद में उन्होंने अपने एलबम को अलग-अलग नाम देना शुरू किया और अन्य गायक-गायिकाओं के साथ गाने लगे। नाम वाला उनका पहला एलबम बुरांश था। नेगी ने मुख्यतः खुद ही गीत का सृजन करते हैं, उन्हें संगीत देते हैं और गाते हैं। लेकिन कुछ गीत उन्होंने अन्य कवियों के भी गाए हैं। अनेक लोकगीतों को भी उन्होंने नया रूप देकर श्रोताओं के सामने रखा है। नेगी अनेक गढ़वाली फिल्मों में भी गीत, संगीत और अपनी आवाज दी है। इन फिल्मों में चक्रचाल, घरजवैं, मेरी गंगा होली मैं मा आली, कौथिग, बंटवारू, छम घुंघरू, जय धारी देवी, सुबेरौ घाम आदि शामिल हैं। नेगी जी की रचनाओं की तीन पुस्तकें खुचकण्डि, मुट बौटिक रख और गाण्यूं की गंगा स्याण्यूं का समोदर भी प्रकाशित हो चुकी है। उनके बहुचर्चित गीत नौछमी नारैणा पर गाथा एक गीत की नामक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है। नरेंद्र सिंह नेगी का जन्म 12 अगस्त 1949 को पौड़ी जनपद के मुख्यालय पौड़ी शहर के लगे पौड़ी गांव में हुआ। उन्होंने वहीं से ही अपनी पढ़ाई पूरी की और बाद में संगीत का प्रशिक्षण लेकर आकाशवाणी में तबला वादक के रूप में नौकरी शुरू की। बाद में वह आकाशवाणी की नौकरी छोड़कर उत्तर प्रदेश के सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग में आ गए। हाल ही में इस गढ़रत्न को दिल का दौरा पड़ा। बहरहाल, अब वह ठीक हैं और स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। ■

> नरेंद्र सिंह नेगी ने संगीत का प्रशिक्षण लेकर आकाशवाणी में तबला वादक के रूप में नौकरी शुरू की। बाद में वह आकाशवाणी की नौकरी छोड़कर उत्तर प्रदेश के सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग में आ गए। उन्होंने अनेक गढ़वाली फिल्मों में भी गीत, संगीत और अपनी आवाज दी है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:32 PM Page

प्रीतम सिंह

अध्यक्ष, उत्तराखंड कांग्रेस

रैंक

18

विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद चकराता के विधायक प्रीतम सिंह को कुछ महीने पहले ही उत्तराखंड कांग्रेस की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने किशोर उपाध्याय से यह जिम्मा संभाला। प्रीतम सिंह जौनसार बावर के चकराता से लगातार चार बार से विधायक हैं। उत्तराखंड में एक नई और युवा टीम बनाने के मद्देनजर प्रीतम सिंह को पार्टी अध्यक्ष बनाया गया। प्रीतम सिंह उत्तराखंड के सर्वश्रेष्ठ विधायक के रूप में सम्मानित हो चुके हैं। उन्हें सरल स्वभाव का माना जाता है तथा जौनसार में उनकी खासी पकड़ मानी जाती है। उन पर रसातल में जा चुकी कांग्रेस में फिर से प्राण फूंकने की अहम जिम्मेदारी है। पूर्व मंत्री स्वर्गीय गुलाब सिंह के पुत्र प्रीतम सिंह सबसे पहले वर्ष 1993 में चकराता विधानसभा सीट से विधायक चुने गए। उत्तराखंड गठन के बाद से वो लगातार चकराता सीट से विधायक हैं। वर्ष 2002 की एनडी तिवारी सरकार और वर्ष 2012 की विजय बहुगुणा और हरीश रावत सरकार में भी वह कैबिनेट मंत्री रहे हैं। प्रदेश और केंद्रीय संगठन में भी प्रीतम सिंह ने कई महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी निभाई है। प्रीतम सिंह के नाम अपने विधानसभा क्षेत्र में कई उपलब्धियां दर्ज हैं। उन्होंने जौनसार-बावर के त्यूणी, चकराता व कालसी में तीन तहसीलों का निर्माण और चकराता, त्यूणी व क्वांसी में तीन डिग्री कॉलेज की स्थापना करवाई। त्यूणी में नियमित पुलिस थाना व कांडोई-भरम में पशु चिकित्सालय की स्थापना का श्रेय भी उन्हीं के नाम दर्ज है। इसके अलावा महासू मंदिर हनोल, लाखामंडल व चकराता के टाइगर फॉल में भी उन्होंने पर्यटन विकास के कई कार्य करवाए हैं। त्यूणी, क्वांसी, पजिटीलानी, लाखामंडल, लखवाड़, अटाल व धिरोई में मिनी स्टेडियम का निर्माण कराने की उपलब्धि भी प्रीतम सिंह के नाम पर दर्ज है। इसके अलावा, उनके समय में क्वांसी व साहिया में दो पॉलीटेक्निक संस्थान और लाखामंडल व कालसी में आईटीआई की स्थापना हुई। ■

“प्रीतम सिंह सबसे पहले वर्ष 1993 में चकराता विधानसभा सीट से विधायक चुने गए। उत्तराखंड गठन के बाद से वो लगातार चकराता सीट से विधायक हैं। वह 2002 की तिवारी सरकार और 2012 की विजय बहुगुणा और हरीश रावत सरकार में भी वह कैबिनेट मंत्री रहे हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:32 PM Page

हीरा सिंह राणा

लोक गायक एवं कवि

रैंक

19

कुमाउंनी के सुप्रसिद्ध कवि और गायक हीरासिंह राणा एक ऐसा व्यक्तित्व हैं, जिनके बिना संभवतः उत्तराखंड के संस्कृति में एक अधूरापन रह जाएगा। कुमाउंनी भाषा में राणा ने न सिर्फ अनेक कविताएं लिखी बल्कि उन रचनाओं को स्वर देकर आम लोगों तक भी पहुंचाया। हालांकि जनमानस में राणा की पहचान एक गायक के रूप में है, लेकिन वास्तव में वे गायक होने से पहले कवि हैं। वह कुमाऊं अंचल की ऐसी आवाज हैं, जिन्हें गढ़वाल में सबसे अधिक पसंद किया जाता है। राणा अब तक 300 से अधिक कविताएं और गीत लिख चुके हैं। उनके तीन कविता संग्रह प्यूंली और बुरांश, मेरी मानिला डानी, मन छौ पड्यों में, प्रकाशित हो चुके हैं। उनके जीवन में एक पुस्तक 'संघर्षों का राही' चारु तिवारी के संम्पादन के प्रकाशित हुई है। राणा के अब तक कई ऑडियो-वीडियो कैसेट आ चुके हैं। इनमें रंगीली बिंदी, रंगदार मुखड़ी, सौ मनै की क्यूरा, ढाई बिसि बरस, अहा रै जमाना जैसे ऑडियो शामिल हैं। वे आज भी लगातार लेखन और गायन में सक्रिय हैं। सांस्कृतिक समारोहों की वे जान होते हैं तो कुमाउंनी कवि सम्मेलन राणा के बिना अधूरे प्रतीत होते हैं। वह देश-विदेश में सांस्कृति कार्यक्रमों और कवि सम्मेलनों के सैकड़ों मंचों को साझा कर चुके हैं और आज भी लगातार वे अपने कार्य में पूरी तरह से सक्रिय हैं।

हीरासिंह राणा का जन्म 16 सितम्बर 1942 को अल्मोड़ा जनपद में सल्ट डुढोली के मानिला गांव में हुआ था। उनकी पढ़ाई अपने गांव और अल्मोड़ा में हुई। पढ़ाई के दौरान ही वे गीत लिखने और गाने लगे थे। उन्होंने पहला गीत आलीली बाखिरी लिली छूछू गाया और उसके बाद तो कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। 1965 में राणा आकाशवाणी के गीत एवं नाट्य प्रभाग से जुड़ और आकाशवाणी के लखनऊ, बनारस, नजीबाबाद जैसे कई केंद्रों में रहे। 1974 में उन्होंने दूरदर्शन में अपनी पहली प्रस्तुत दी। ■

"कुमाऊं अंचल की ऐसी आवाज हैं, जिन्हें गढ़वाल में सबसे अधिक पसंद किया जाता है। राणा अब तक 300 से अधिक कविताएं और गीत लिख चुके हैं। उनके तीन कविता संग्रह प्यूंली और बुरांश, मेरी मानिला डानी, मन छौ पड्यों में, प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रीतम भरतवाण

जागर एवं लोक गायक

रैंक

20

जागर और पांवड़े उत्तराखंड की संस्कृति अभिन्न अंग रहे हैं, बल्कि कहा जाए कि इनके बिना गढ़वाल की संस्कृति अर्थहीन हो जाएगी तो गलत न होगी। एक ऐसे दौर में जबकि यहां का जनमानस जागर और पंवाड़ों से विमुख होने की कगार पर था, प्रीतम भरतवाण ने जागर और पंवाड़ों के कई कैसेट निकालकर और कई मंचों पर इन्हें गाकर एक बार फिर से जनमानस का इन विधाओं से परिचय करवाया। प्रीतम भरतवाण जागर और पंवाड़ों को अपने गायन में शामिल न करते तो इनका अस्तित्व खत्म होना तय था। लगातार अपेक्षित होते जा रहे ढोल को लेकर भी प्रीतम भरतवाण ने कार्य किया, नतीजा यह है कि आज ढोल दमाऊं का दौर लौटा है। उत्तराखंड में पंवाड़ों के रूप में प्रचलित लगभग सभी वीर गाथाओं और प्रणय गाथाओं पर वह गीत गा चुके हैं। इसके अतिरिक्त वह ढोल विधा के प्रचार प्रचार की ओर भी ध्यान दे रहे हैं। अपने अलबम में ढोल का प्रयोग करने के साथ ही उन्होंने ढोल प्रशिक्षण के लिए एक पाठ्यक्रम भी तैयार किया है। वह दुबई, ओमान, जर्मनी, हॉलैंड और अमेरिका में भी प्रस्तुति दे चुके हैं। उनके गीतों की एक पुस्तक 'सुर्ज कांठ्यों' भी प्रकाशित हुई है। उन्हें अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं।

प्रीतम भरतवाण का जन्म 17 सितम्बर 1970 को ग्राम सिल्ला, पट्टी भटबेड, जिला देहरादून में हुआ था। उन्होंने स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की और गायन की ओर मुड़ गये। आरम्भ छोटे-छोटे कार्यक्रमों से हुआ। 1988 में आकाशवाणी के नजीबाबाद केंद्र से उनके पहले गीत का प्रसारण हुआ और फिर तो सिलसिला चला पड़ा। 1993 में भरतवाण ने पहली ऑडियो कैसेट 'रंगीली भौजी' निकाली। उनके अब तक दो दर्जन से अधिक ऑडियो कैसेट और 15 से ज्यादा वीडियो अलबम निकल चुके हैं। चार फिल्मों में भी उन्होंने काम किया है। ■

"1988 में आकाशवाणी के नजीबाबाद केंद्र से उनके पहले गीत का प्रसारण हुआ और फिर तो सिलसिला चला पड़ा। 1993 में भरतवाण ने पहली ऑडियो कैसेट 'रंगीली भौजी' निकाली। उनके अब तक दो दर्जन से अधिक ऑडियो कैसेट और 15 से ज्यादा वीडियो अलबम निकल चुके हैं।

रैंक
21

दीपक डोबरियाल अभिनेता

'तनु वेड्स मनु' सीरीज में पप्पी जी का किरदार निभाकर दीपक डोबरियाल हर घर में लोकप्रिय हो चुके हैं। लेकिन थियेटर बैकग्राउंड से आए उत्तराखंड के इस सपूत ने ओमकारा, शौर्य, गुलाल जैसी फिल्मों में अपनी दमदार एक्टिंग का लोहा भी मनवाया है। वह हर तरह के किरदार के साथ न्याय करने वाले अभिनेता हैं। यही वजह है कि अब तक के फिल्मी करियर में दीपक को अलग-अलग भूमिकाओं में देखा गया है, सराहा गया है।

दीपक कॉमेडियन नहीं बल्कि एक संजीदा अदाकार हैं। 2007 में उन्हें ओमकारा के लिए विशेष फिल्म फेयर पुरस्कार मिल चुका है। इसके अलावा उन्हें तनु वेड्स मनु के लिए आईफा और स्टार स्क्रीन अवाड्र्स से सम्मानित किया जा चुका है। हाल के वर्षों में दीपक ने कई चर्चित रोल किए चाहे वह दंबग-2 में गैंदा का किरदार ही क्यों न हो। दीपक ऐसे परिवार से आए जिसका दूर-दूर तक कोई इस फील्ड में नहीं था। बस एक्टिंग की धुन लगी तो थियेटर करते रहे। विशाल भारद्वाज के साथ मकबूल में छोटा सा रोल करने के साथ शुरूआत हुई। इस दौरान पंकज कपूर की नजर दीपक पर पड़ी। उन्होंने खुद विशाल से कहा कि ये लड़का एक्टिंग के लिए बना है बॉडीगार्ड के रोल के लिए नहीं। इसके बाद ओमकारा में विशाल ने रोल दिया, जो करियर का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। हालांकि अब तक का उनका सबसे चर्चित किरदार तनु वेड्स मनु फिल्म का पप्पी जी रहा है। उत्तराखंड को लेकर बेहद संजीदा दीपक एक सितंबर 1975 को पौड़ी गढ़वाल के रिखणीखाल के कबरा गांव में पैदा हुए। पिताजी की जॉब दिल्ली में थी तो वहां से दिल्ली आ गए। फिर स्कूल, कॉलेज और थियेटर किया। दिल्ली में सात साल थियेटर किया। छह साल अरविंद गौड़ के साथ और एक साल एमके शर्मा के साथ। फिर मुंबई में छोटा-मोटा काम मिलना शुरू हुआ और करियर शुरू हो गया। ■

> २००७ में उन्हें ओमकारा के लिए विशेष फिल्म फेयर पुरस्कार मिल चुका है। इसके अलावा उन्हें तनु वेड्स मनु के लिए आईफा और स्टार स्क्रीन अवाड्र्स से सम्मानित किया जा चुका है। हाल के वर्षों में दीपक ने कई चर्चित रोल किए चाहे वह दंबग-२ में गैंदा का किरदार ही क्यों न हो।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:32 PM Page

उर्वशी रौतेला अभिनेत्री

रैंक

22

बॉलीवुड अभिनेत्री उर्वशी रौतेला ने बहुत कम समय में लाखों लोगों को अपना प्रशंसक बनाया है। उर्वशी की पहचान एक उभरती अभिनेत्री व मॉडल के रूप में है। उर्वशी एक ऐसी अभिनेत्री है जिन्होंने सबसे ज्यादा ब्यूटी पीजेंट्स जीते हैं वो एक बार ही नहीं बल्कि दो-दो बार मिस यूनिवर्स इंडिया का खिताब अपनी झोली में डाल चुकी हैं। इस कारण वह दो बार मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में भारत की ओर से शामिल हुईं। उर्वशी ने वर्ष 2015 में मुंबई में आयोजित मिस दिवा-2015 का खिताब जीतकर मिस यूनिवर्स में एंट्री पाई थी। उन्होंने लास वेगास में 19 दिसंबर 2015 को मिस यूनिवर्स कांटेस्ट-2015 में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इससे पहले उन्होंने 2012 में भी इस कांटेस्ट में हिस्सा लिया था, लेकिन तब उम्र 23 दिन कम होने के कारण निराशा उनके हाथ लगी थी।

आमतौर पर अभिनेत्रियां ब्यूटी पीजेंट का खिताब जीतने के बाद फिल्मों का रुख करती हैं लेकिन उर्वशी ने 2012 में मिस यूनिवर्स कांटेस्ट से मायूस होने के बाद फिल्मों का रुख किया। साल 2013 में वह अभिनेता सनी देओल के साथ सिंह साब दी ग्रेट में नजर आईं। इसके बाद उन्होंने 2015 में फिर ब्यूटी कांटेस्ट का रुख किया। साल 2016 में उर्वशी की दो फिल्में ग्रेट ग्रेंड मस्ती और सनम रे आईं। हिंदी फिल्मों के अलावा उर्वशी कन्नड़ और बंगाली फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। उर्वशी का जन्म 25 फरवरी 1994 को उत्तराखंड के हरिद्वार में हुआ। इसके बाद मां मीरा रौतेला और पिता मनवर रौतेला के साथ उनका परिवार पौड़ी गढ़वाल के कोटद्वार शहर में आकर बस गया। उर्वशी की प्राथमिक शिक्षा ब्लूमिंग वेल पब्लिक स्कूल कोटद्वार से हुई। बचपन में पढ़ाई में अव्वल रहीं उर्वशी इंजीनियर बनना चाहती थीं। उन्होंने 15 साल की उम्र से ब्यूटी पीजेंट में हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। फिल्मों के अलावा उर्वशी म्यूजिक वीडियो में भी नजर आ चुकी हैं। ■

“ उर्वशी ने वर्ष २०15 में मुंबई में आयोजित मिस दिवा-२०15 का खिताब जीतकर मिस यूनिवर्स में एंट्री पाई थी। उन्होंने लास वेगास में 19 दिसंबर २०15 को मिस यूनिवर्स कांटेस्ट-२०15 में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इससे पहले उन्होंने २०1२ में भी इस कांटेस्ट में हिस्सा लिया था।

मंगला माता धर्म गुरु

रैंक

23

माता मंगला आध्यात्मिक गुरु होने के साथ ही सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। अपने पति भोले जी महाराज के साथ मिलकर मंगला माता हंस फाउंडेशन चला रही हैं। यह फाउंडेशन उत्तराखंड में जरूरतमंदों की सेवा के साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। राज्य सरकार ने उत्तराखंड रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया है। हंस फाउंडेशन ने हाल ही में सतपुली में एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का शुभारंभ किया। हंस फाउंडेशन उत्तराखंड में आज एक ऐसी संस्था के रूप में जानी जाती है, जो हर समय दीन-दुखियों की सेवा और प्रतिभाओं के प्रोत्साहित करने के कार्य में आगे रहती है। कोई भीजरूरतमंद इस संस्था से संपर्क कर मदद ले सकता है। जरूरतमंदों को व्यक्तिगत रूप से मदद करने और प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के अतिरिक्त इस संस्था ने अनेक सामाजिक कार्य भी किए हैं। संस्था के माध्यम से सतपुली में अत्याधुनिक सुविधाओं वाला अस्पताल बनाया गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, कृषि, वन, पर्यावरण संतुलन, महिला सशक्तीकरण तथा विकलांग कार्यक्रम चलाने के लिए इस संस्था ने उत्तराखंड सरकार के साथ समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।

हंस फाउंडेशन ने 2020 तक राज्य में 500 मॉडल स्कूल खोलने और 5590 विद्यालयों के मिड-डे मील के लिए गैस कनेक्शन उपलब्ध कराने का भी संकल्प लिया। संस्थान ने राज्य में वकीलों और पत्रकारों के कल्याण के लिए 50-50 लाख के कोष की स्थापना भी की है। माता मंगला जी का जन्म 16 अक्टूबर 1956 को टिहरी जिले में सरजूला पट्टी के पांगर गांव में हुआ था। उनका परिवार एक धर्मनिष्ठ परिवार था और माता मंगला के पिता मातवर सिंह सजवाण भारतीय सेना में थे। उन्हें शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था। उनका विवाह भोले जी महाराज से हुआ जो सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु हंस महाराज और माता राजराजेश्वरी देवी के दूसरे पुत्र हैं। ■

> हंस फाउंडेशन उत्तराखंड में जरूरतमंदों की सेवा के साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। राज्य सरकार ने उत्तराखंड रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया है। हंस फाउंडेशन ने हाल ही में सतपुली में एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का शुभारंभ किया गया है।

चंडी प्रसाद भट्ट पर्यावरणविद्

रैंक

24

विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित और महान चिपको आंदोलन के सक्रिय सदस्य रहे चंडी प्रसाद भट्ट देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त पर्यावरणविद हैं। वे पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर लगातार लिखते रहे हैं। वर्तमान में अधिक उम्र होने के बावजूद चमोली जिले के अपने गांव में रहकर पर्यावरण जागरूकता संबंधी कार्यों में संलग्न हैं।

1964 में उन्होंने गोपेश्वर में 'दशोली ग्राम स्वराज मंडल' की स्थापना की और ग्रामीणों की विभिन्न समस्याओं के लिए संघर्ष शुरू किया। 1973 में वनों की रक्षा के लिए रैणी गांव में शुरू किया गया चिपको आंदोलन इसी संघर्ष का नतीजा था। चिपको आंदोलन की प्रसिद्धि के साथ ही भट्ट को भी अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। पर्यावरण के क्षेत्र में भट्ट अब तक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इनमें रमन मैगसेसे 1982, पद्मश्री 2005, पद्मभूषण 2013 और गांधी शांति पुरस्कार 2015 भी शामिल हैं। भट्ट पर्यावरण और हिमालय संबंधी मुद्दों को लगातार उठाते हैं। इन पर वे लगातार लिखते रहे हैं और देश विदेश में आयोजित सम्मेलनों में भी इन विषयों को उठाते रहे हैं।

भट्ट का जन्म 23 जून 1934 को चमोली जनपद के गोपेश्वर में हुआ। जन्म से पूर्व ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण माता ने उन्हें बहुत गरीबी में पाला और पढ़ाया। उनकी पढ़ाई रुद्रप्रयाग और पौड़ी में हुई। घर के खर्च चलाने के लिए उन्होंने गढ़वाल मोटर ओनर्स यूनियन (जीएमओयू) में बुकिंग क्लर्क की नौकरी की। 1956 में जयप्रकाश नारायण गढ़वाल भ्रमण पर आये तो भट्ट उनसे इतने प्रभावित हुए कि सर्वोदय आंदोलन से जुड़ गये। 1960 में उन्होंने बुकिंग क्लर्क की नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह से सर्वोदयी कार्यकर्ता बन गए। ■

“ 1973 में वनों की रक्षा के लिए रैणी गांव में शुरू किया गया चिपको आंदोलन इसी संघर्ष का नतीजा था। चिपको आंदोलन की प्रसिद्धि के साथ ही भट्ट को भी अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। पर्यावरण के क्षेत्र में भट्ट अब तक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:33 PM Page

रैंक
25

डॉ. धन सिंह रावत उच्च शिक्षा मंत्री

अक्सर सरल और हल्के-फुल्के अंदाज में नजर आने वाले भाजपा के युवा पीढ़ी के खांटी नेता और उत्तराखंड के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत संगठन पर पकड़ के लिए विख्यात हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् से भाजपा में आए और संघ के करीबी धन सिंह की खासियत यह है कि प्रदेश स्तर पर ही नहीं केंद्रीय स्तर पर भी उनके रिश्ते बेहद अच्छे हैं। वह न सिर्फ मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत के विश्वासपात्र और करीबी हैं बल्कि सीएम उनकी सांगठनिक पकड़ और काबिलियत के मुरीद भी दिखते हैं। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय भट्ट भी उनको बहुत मानते हैं। उम्र और सांगठनिक पद में छोटे होने के बावजूद भट्ट उन्हें धन दा कहने में बिलकुल नहीं हिचकते। धन सिंह के पास सहकारिता, प्रोटोकॉल और दुग्ध विकास मंत्रालय भी है। बतौर मंत्री धन सिंह ने अपनी पारी की शुरूआत बड़े धमाकेदार तरीके से की। जन हित के कई मामलों में त्वरित निर्णय लेकर उन्होंने अपने कई वरिष्ठों को पीछे छोड़ दिया। मंत्री पद संभालते ही डॉ. रावत ने लीक से हटकर कुछ नए फैसले लिए। देहरादून में सात दिवसीय सहकारिता सम्मेलन का आयोजन कर अपनी धमाकेदार मौजूदगी दर्ज कराई। इसके बाद दुग्ध जागरूकता सप्ताह का आयोजन कर लोगों को शुद्ध दूध पीने के प्रति जागरूक किया। उनकी योजना प्रदेश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शैक्षिक सत्र को नियमित करना, सहकारिता से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ना और दुग्ध संघों को घाटे से उबारना है। जब प्रधानमंत्री मोदी केदारपुरी पहुंचे थे तो वह धन सिंह ही मोर्चा संभाले हुए थे। चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री मोदी से लेकर केंद्रीय मंत्री उमा भारती सहित कई दिग्गज नेता श्रीनगर विधान सभा में डॉ. रावत के प्रचार में पहुंचे थे। उस समय पीएम मोदी ने अपने भाषण की शुरूआत भी गढ़वाली में की थी। 7 अक्टूबर 1972 को पौड़ी गढ़वाल की कंडारस्यूं पट्टी के नौगांव में जन्मे धन सिंह की शुरूआती शिक्षा गांव से हुई। उन्होंने हेमवंती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। ■

> “डॉ. धन सिंह रावत ने मंत्री पद संभालते ही लीक से हटकर कुछ नए फैसले लिए। देहरादून में सात दिवसीय सहकारिता सम्मेलन का आयोजन कर अपनी धमाकेदार मौजूदगी दर्ज कराई। इसके बाद दुग्ध जागरूकता सप्ताह का आयोजन कर लोगों को शुद्ध दूध पीने के प्रति जागरूक किया।

अजय टम्टा

केंद्रीय वस्त्र राज्यमंत्री

रैंक

26

उत्तराखंड के तमाम दिग्गजों को पछाड़ते हुए अजय टम्टा को टीम मोदी में शामिल किया गया और केंद्रीय कपड़ा राज्यमंत्री बनाया गया। वह पहली बार सांसद बने और मोदी कैबिनेट में जगह भी पा ली। जिला पंचायत सदस्य से राजनीति की शुरूआत कर राष्ट्रीय कैबिनेट तक पहुंचने वाले अजय टम्टा का सफर अपने आप में उल्लेखनीय रहा है। अजय टम्टा उत्तराखंड में भाजपा के युवा चेहरे के साथ-साथ दलित नेता के रूप में उभर कर सामने आएं हैं। टम्टा भाजपा संगठन में अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

अल्मोड़ा जिले के दुगालखोला के एक दलित परिवार में 16 जुलाई, 1972 को जन्में अजय टम्टा के राजनीतिक सफर की शुरूआत जिला पंचायत सदस्य के रूप में हुई। अजय टम्टा ने सबसे पहले जिले के तल्ला तिखून से जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। इसके बाद टम्टा 1996 जिलापंचायत उपाध्यक्ष बने। इसके साथ ही उन्होंने जिला पंचायत में कार्यवाहक अध्यक्ष के पद पर भी कार्य किया। 2002 में सोमेश्वर से भाजपा से टिकट नहीं मिलने पर अजय टम्टा ने निर्दलीय चुनाव लड़ा। इस चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। लेकिन 2007 में विधानसभा चुनाव में टम्टा को भाजपा ने टिकट दिया। 2009 में टम्टा को लोकसभा का टिकट तो मिला, लेकिन टम्टा को हार का सामना करना पड़ा।

2012 में टम्टा एक बार फिर विधायक बने। इसके बाद भाजपा ने अल्मोड़ा सुरक्षित सीट से उन्हें 2014 में लोकसभा टिकट दिया और उन्होंने अपने विरोधी कांग्रेस के प्रदीप टम्टा को हराकर जीत दर्ज की। अजय टम्टा उन नेताओं में शामिल हैं, जो केंद्रीय मंत्रिमंडल में होने के बावजूद लगातार अपने संसदीय क्षेत्र में जाते रहते हैं। उनके उत्तराखंड के दौरान हमेशा चर्चा में रहते हैं। टम्टा ने 2011 में नैनीताल के चितई मंदिर में सोनल टम्टा से शादी की। इस दंपति के दो बच्चे हैं। ■

> अजय टम्टा उन नेताओं में शामिल हैं, जो केंद्रीय मंत्रिमंडल में होने के बावजूद लगातार अपने संसदीय क्षेत्र में जाते रहते हैं। उनके उत्तराखंड के दौरान हमेशा चर्चा में रहते हैं। उन्होंने सबसे पहले जिले के तल्ला तिखून से जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ा और जीत हासिल की।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:34 PM Page

प्रदीप सिंह खरोला

चेयरमैन, इयर इंडिया

रैंक

27

मोदी सरकार में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रहे उत्तराखंडियों में नया नाम प्रदीप सिंह खरोला का है। उन्हें सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र की विमानन कंपनी एयर इंडिया का नया चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक नियुक्त किया है। वह इस समय बेंगलुरु मेट्रो रेल निगम के प्रबंध निदेशक हैं। एयर इंडिया में शीर्ष पद पर यह बदलाव ऐसे समय किया गया है जबकि सरकार राष्ट्रीय विमानन कंपनी के रणनीतिक विनिवेश के तौर तरीकों को अंतिम रूप दे रही है। दरअसल, खरोला सार्वजनिक परिवहन कंपनियों को घाटे से निकाल कर लाभ देने वाली कंपनी बनाने के विशेषज्ञ हैं। वह बेंगलुरू की सिटी बस सेवा बेंगलुरू मेट्रोपॉलिटन ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन घाटे से उबारकर वर्ष 2000 में फायदे में ले आए थे। बेंगलुरू में मेट्रो सेवा की शुरूआत में भी उनका अहम योगदान रहा है।

वह 1985 बैच के कर्नाटक के आईएएस अधिकारी हैं। खरोला 2012-13 में कर्नाटक के मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव रहे। उन्होंने कर्नाटक में अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट एंड फाइनेंस कार्पोरेशन (केयूआईडीएफसी) का नेतृत्व भी किया है। यह कार्पोरेशन शहरों में आधारभूत ढांचे के निर्माण के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों से धन जुटाता है। खरोला नेशनल एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म कमीशन के ज्वाइंट सेक्रेटरी भी रहे हैं। 30 साल के लंबे करियर में खरोला के नाम शहरी शासन, शहरी सार्वजनिक परिवहन और नीति निर्माण का अनुभव दर्ज है। 2012 में उन्हें ई-गवर्नेंस के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। इसके अलावा, वर्ष 2013 में उन्हें प्रधानमंत्री उत्कृष्ट लोक प्रशासन पुरस्कार भी प्रदान किया गया। खरोला ने इंदौर विश्वविद्यालय से 1982 में मैकेनिकल की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने आईआईटी दिल्ली से 1984 में इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। यहां वह टॉपर रहे। वह फिलीपींस के मनीला स्थित एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट से डेवलपमेंट मैनेजमेंट में मास्टर्स कर चुके हैं। ■

> प्रदीप खरोला सार्वजनिक परिवहन कंपनियों को घाटे से निकाल कर लाभ देने वाली कंपनी बनाने के विशेषज्ञ हैं। वह बेंगलुरु की सिटी बस सेवा मेट्रोपॉलिटन ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन घाटे से उबारकर वर्ष २००० में फायदे में ले आए थे।

तिग्मांशु धूलिया फिल्मकार

रैंक

28

फिल्मकार, निर्देशक तिग्मांशु धूलिया को लीक से हटकर फिल्में बनाने के लिए जाना जाता है। तिग्मांशु ने 1990 में बैंडिट क्वीन में बतौर कास्टिंग निर्देशक अपने फिल्मी सफर की शुरूआत की। इस फिल्म के लिए उन्होंने संवाद भी लिखे। मणिरत्नम द्वारा निर्देशित फिल्म दिल से की इन्होंने पटकथा लिखी। द वारियर, स्टिफ अपर लिप्स और बाम्बे ब्ल्यूज में भी उन्होंने कास्टिंग की। 2003 में उनके फिल्मी करियर ने रफ्तार पकड़ी जब उन्होंने बहुचर्चित फिल्म हासिल का निर्देशन किया। इस फिल्म के लिए इरफान खान को फिल्मफेयर का नकारात्मक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला। एक साल बाद 2004 में उन्होंने इरफान खान, जिमी शेरगिल और उदय चोपड़ा को लेकर फिल्म बनाई चरस एक ज्वाइंट ऑपरेशन। 2011 में उनके द्वारा निर्देशित दो फिल्में आईं शागिर्द और साहब बीबी और गैंगस्टर।

2012 में धूलिया द्वारा निर्देशित फिल्म पान सिंह तोमर आई, जिसे काफी सराहना मिली। यह फिल्म चंबल के बागी बने एथलीट पान सिंह तोमर के जीवन पर आधारित थी। बतौर अभिनेता तिग्मांशु ने अपने करियर की शुरूआत अनुराग कश्यप द्वारा निर्देशित फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर-1 से की। इस सीरीज की पहली और दूसरी फिल्म में उन्होंने रामाधीर सिंह का किरदार निभाया। तिग्मांशु का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 3 जुलाई 1967 को हुआ था। उनका परिवार मूल रूप से उत्तराखंड के पौड़ी जिले के मदनपुर गांव से है। उनके पिता केशव चंद्र धूलिया हाईकोर्ट के जज थे और माता सुमित्रा धूलिया संस्कृत की प्रोफेसर थीं। तिग्मांशु ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई सेंट जोसेफ स्कूल और एंग्लो बंगाली इंटरमीडिएट कालेज से की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से रंगमंच में परास्नातक किया। ■

> 1990 में बैंडिट क्वीन में बतौर कास्टिंग निर्देशक अपने फिल्मी सफर की शुरुआत की। इस फिल्म के लिए उन्होंने संवाद भी लिखे। मणिरत्नम द्वारा निर्देशित फिल्म दिल से की इन्होंने पटकथा लिखी। द वारियर, स्टिफ अपर लिप्स और बाम्बे ब्ल्यूज़ में भी कास्टिंग की।

रैंक

29

राघव जुयाल अभिनेता, कोरियाग्राफर

फिल्म जगत में राघव जुयाल अब एक जाना पहचाना नाम हैं। एक डांसर और अभिनेता के तौर पर उन्होंने बहुते तेजी से सफलता की सीढ़ियां चढ़ी हैं। अपने अनोखी डांस स्टाइल, चपल स्टेज एंकरिंग से राघव ने रियलिटी शो की दुनिया में नई पहचान बनाई है। क्रोकोडाइल और कॉकरोच से प्रभावित क्रोकरोज नाम की डांस स्टाइल को लोकप्रिय बनाकर राघव एक यूथ आइकन बन चुके हैं। हाल के समय में वह एक बेहतरीन एंकर बनकर उभरे हैं। अब वह कई डांस शो को होस्ट कर चुके हैं। डांस के साथ-साथ कॉमेडी पर भी राघव की जबरदस्त पकड़ है।

राघव ने सफलता की सीढ़ियां जीटीवी के बहुचर्चित रियलिटी शो डांस इंडिया डांस के तीसरे सीजन से चढ़नी शुरू की। साल 2012 सीजन में वह दूसरे रनरअप रहे। उनकी लोकप्रियता इस कदर थी कि शो से बाहर होने के बाद वह राघव ने इस शो में पब्लिक वोटिंग से वाइल्ड कार्ड एंट्री ली। इसके बाद उन्होंने डीआईडी लिटिल मास्टर्स और डांस के सुपरकिड्स जैसे डांस शो में कोरियाग्राफर स्किपर की भूमिका निभाई। इस दौरान उनकी टीम ने डांस के सुपरकिड्स का खिताब जीता। राघव ने डांस की विधिवत कोचिंग नहीं ली है। इंटरनेट और टीवी की मदद से डांस सीखा है। उन्होंने खुद से ही स्लोमोशन डांस का पॉवर के साथ फ्यूजन कर एक नई विधा क्रोकरोज ईजाद की। उनके स्लोमोशन डांस को भारत के कई नामीगिरामी कोरियोग्राफरों द्वारा सराहा गया है।

राघव इस समय मुंबई में रहते हैं। 10 जुलाई 1991 को जन्मे राघव देहरादून के रहने वाले हैं। उनके पिता दीपक जुयाल वकील हैं। वहीं मां अलका जुयाल हाउसवाइफ हैं। मूल रूप से राघव पौड़ी गढ़वाल के खेतू से संबंध रखते हैं। राघव ने अपनी शुरूआती शिक्षा दून इंटरनेशनल स्कूल से ली और बाद में डीएवी पीजी कालेज देहरादून से बीकॉम किया। ■

> राघव ने सफलता की सीढ़ियां जीटीवी के बहुचर्चित रियलिटी शो डांस इंडिया डांस के तीसरे सीजन से चढ़नी शुरू की। साल २०१२ सीजन में वह दूसरे रनरअप रहे। उनकी लोकप्रियता इस कदर थी कि शो से बाहर होने के बाद वह राघव ने इस शो में पब्लिक वोटिंग से वाइल्ड कार्ड एंट्री ली।

अनिल रतूड़ी

डीजीपी, उत्तराखंड

रैंक

30

उत्तराखंड के 10वें डीजीपी अनिल रतूड़ी सिर्फ पुलिस महानिदेशकों की सूची में एक और नाम भर नहीं हैं। उत्तर प्रदेश के कई जिलों में सेवाएं दे चुके हैं। 1978 बैच के आईपीएस अधिकारी अनिल रतूड़ी 1992 के अयोध्या दंगों के दौरान लखनऊ के एसपी सिटी रहे थे और वहां दंगे नियंत्रित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपने लंबे पुलिस करियर के दौरान उन्होंने न सिर्फ पीलीभीत में आंतकवाद से मुकाबला किया है बल्कि मेरठ का ऑर्गेनाइज्ड क्राइम की कमर तोड़ने के लिए भी काम किया है। प्रतिभावान अधिकारी रहे अनिल रतूड़ी के बारे में 2000 में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन डीजीपी की राय थी कि वह उत्तर प्रदेश पुलिस के मुखिया बन सकते हैं। लेकिन उत्तराखंड के गठन का ऐलान होने के बाद यूपी की आईएएस और आईपीएस एसोसिएशन ने प्रस्ताव पारित कर कहा था कि वे उत्तराखंड नहीं जाना चाहते। लेकिन रतूड़ी ने डीजीपी की सलाह के विपरीत अपने गृह प्रदेश आने की इच्छा जताई थी।

उत्तराखंड पुलिस में अनिल रतूड़ी की भूमिका इससे समझी जा सकती है कि राज्य में आने वाले वह पहले आईपीएस अधिकारी थे। बतौर ओएसडी उत्तरांचल (तब यही नाम तय हुआ था) अगस्त 2000 में देहरादून आए रतूड़ी ने यहां पुलिस हेडक्वार्टर स्थापित करने से लेकर प्रदेश पुलिस का ढांचा तैयार करने का काम किया। पुलिस करियर के दौरान उन्हें कई सम्मान भी मिले हैं। इनमें 1997 में डायरेक्ट एनपीएस कमेंडेशन डिस्क, 2003 में लंबी और सराहनीय सेवा के लिए पुलिस मेडल और 2011 में उल्लेखनीय सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक शामिल है। उत्तराखंड पुलिस सेवाओं के जनक अनिल रतूड़ी कहते हैं कि हालांकि राज्य की पुलिस बहुत हद तक अपने स्लोगन मित्र पुलिस के नजदीक है लेकिन अभी बहुत सुधार किया जाना जरूरी है। उनके परिवार में पत्नी राधा रतूड़ी (प्रमुख सचिव, उत्तराखंड सरकार) के अलावा दो बेटियां हैं। ■

> उत्तराखंड पुलिस में अनिल रतूड़ी की भूमिका इससे समझी जा सकती है कि राज्य में आने वाले वह पहले आईपीएस अधिकारी थे। बतौर ओएसडी उत्तरांचल अगस्त 2000 में देहरादून आए रतूड़ी ने यहां पुलिस हेडक्वार्टर स्थापित करने से लेकर प्रदेश पुलिस का ढांचा तैयार करने का काम किया।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:34 PM Page

रैंक
31

डॉ. खड़ग सिंह वल्दिया भूवैज्ञानिक

डॉ. खड़ग सिंह वाल्दिया देश में प्रमुख भूवैज्ञानिकों में शामिल हैं। भूगर्भ विज्ञान के क्षेत्र में उनका अभूतपूर्व योगदान रहा है। कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके डॉ. वाल्दिया को हिमालयी भूसंरचना का जानकार माना जाता है। भूविज्ञान के क्षेत्र में योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 2007 में पद्मश्री और 2015 में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। पद्मश्री और पद्मभूषण के अतिरिक्त उन्हें दर्जनों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। इनमें शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार, विज्ञान और पर्यावरण के लिए जीएम मोदी पुरस्कार, हिंदी सेवी सम्मान, प्रिंस मुकर्रम गोल्ड मेडल, नेशनल मिनरल अवार्ड फार एक्सीलेंस, पंडित पंत नेशलन इनवायरमेंट फेलो जैसे पुरस्कार शामिल हैं।

वह हिंदी और अंग्रेजी में 110 शोध पत्र और 14 पुस्तकें लिख चुके हैं। नौ पुस्तकों का संपादन करने के साथ ही उन्होंने भूगर्भ विज्ञान पर 40 से अधिक लेख भी लिखे हैं। अब भी उनका कार्य अनवरत जारी है। डॉ. वाल्दिया का जन्म 20 मार्च 1937 को म्यांमार में हुआ। 1947 में उनका परिवार पिथौरागढ़ में अपने गांव लौट आया। पिथौरागढ़ से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से बीएससी, एमएससी और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की और फैकल्टी मेम्बर के रूप में विश्वविद्यालय में नौकरी शुरू की। 1965-66 वे हाकिंस यूनिवर्सिटी चले गए। लौटकर वह राजस्थान विश्वविद्यालय, वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी, जवाहर लाल नेहरू इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च और कुमाऊं विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों में रहे। 1981 में वे कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति बने। डॉ. वालिया भूविज्ञान से संबंधित अनेक संस्थानों की स्थापना में भी सहायक रहे। ■

> कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके डॉ. वाल्दिया को हिमालयी भूसंरचना का जानकार माना जाता है। भूविज्ञान के क्षेत्र में योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें २००७ में पद्मश्री और २०१५ में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया।

डॉ. शेखर पाठक इतिहासकार एवं संस्कृतिकर्मी

रैंक
32

पद्मश्री सहित अनेक अन्य पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. शेखर पाठक को इतिहासकार, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता और संस्कृतिकर्मी के रूप में जाना जाता है। वे मध्य हिमालय के समाज, संस्कृति और भूगोल में महान ज्ञाता हैं। वर्तमान में डॉ. पाठक नैनीताल में निवास करते हैं और विश्वविद्यालय की सेवा से निवृत्त होकर अपने लेखन और सामाजिक कार्यों का निर्वहन कर रहे हैं। वर्ष 1983 में डॉ. पाठक ने पीपुल्स एसोसिएशन फॉर हिमालय एरिया रिसर्च (पहाड़) संस्था की स्थापना की। इस संस्थान पहाड़ की सरोकारों से जुड़े अनेक कार्य करने के साथ ही शोध और अध्ययन पर आधारित पुस्तकों का भी प्रकाशन कर रही है। अब तक इस संस्था के माध्यम ने अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जो पहाड़ को जानने-समझने में अत्यधिक उपयोगी साबित हो रही हैं।

डॉ. पाठक का जन्म एक जुलाई, 1949 को पिथौरागढ़ जिले में गंगोलीहाट के निकट पटक्यूड़ा गांव में हुआ। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने कुछ समय तक लोकनिर्माण विभाग में नौकरी की और बाद में प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन किया। 1974 में वे कुमाऊं विश्वविद्यालय में अध्यापन करने लगे। विश्वविद्यालय के नौकरी के साथ ही उन्होंने लेखन, शोध और सामाजिक कार्यों में रुचि लेनी शुरू की। वर्ष 1974 में विश्वविद्यालय के छात्रों और कुछ अन्य लोगों के साथ अस्कोट से आराकोट तक की पदयात्रा की। इस पदयात्रा का उद्देश्य इस पूरे हिमालयी क्षेत्र की सामाजिक संरचना, परम्पराओं और इस क्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन करना था। यह प्रयोग अत्यधिक सफल रहा। उसके बाद तो हर 10 वर्षों में अस्कोट-अराकोट यात्रा की जाने लगी। 1984, 1994, 2004 और 2014 में यह यात्रा हुई और हर बार अपने-अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वाले लोग इस यात्रा से जुड़ते चले गये। वर्ष 2007 में भारत सरकार की ओर में पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। ■

> 1983 में डॉ. पाठक ने पीपुल्स एसोसिएशन फॉर हिमालय एरिया रिसर्च (पहाड़) संस्था की स्थापना की। इस संस्थान पहाड़ की सरोकारों से जुड़े अनेक कार्य करने के साथ ही शोध और अध्ययन पर आधारित पुस्तकों का भी प्रकाशन कर रही है।

सुश्री बछेंद्री पाल पर्वतारोही

रैंक
33

बछेंद्री पाल को यदि पर्वतपुत्री कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बपचन से ही पहाड़ों पर चढ़ने और उतरने की मजबूरी एक दिन बछेंद्री को एवरेस्ट जैसी ऊंचाई पर ले जाएगी, यह शायद किसी ने सोचा भी नहीं होगा। विश्व की अनेक चोटियां पर आरोहण करने के बाद बछेंद्री ने 23 मई, 1984 के दिन दोपहर एक बजकर सात मिनट पर जब माउंट एवरेस्ट की चोटी को चूमा तो वह विश्व के इस सबसे ऊंचे पर्वत पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बन गई।

साहसिक कार्यों के लिए बछेंद्री पाल को अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इनमें अर्जुन पुरस्कार, नेशनल एडवेंचर अवार्ड, नेशनल यूथ अवार्ड, आईएमएफ द्वारा स्वर्ण पदक, शिक्षा विभाग द्वारा स्वर्ण पदक, कोलकाता लेडीज स्टडीज ग्रुप अवार्ड जैसे पुरस्कार शामिल हैं। सन 1985 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया। बछेंद्री ने अपना नाम गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकाड्र्स में भी दर्ज करवाया। गढ़वाल विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें डी. लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने 'मेरी शिखर यात्रा' पुस्तक भी लिखी, जो एवरेस्ट यात्रा पर आधारित है।

बछेंद्री पाल का जन्म 24 मई 1954 को उत्तरकाशी जिले के नकुरी गांव में एक भोटिया जनजातीय परिवार में हुआ था। पिता किशन सिंह भी आम भोटिया परिवारों की तरह छोटा-मोटा व्यवसाय करते थे। इनके परिवार गर्मियों में हर्सिल चले जाते थे और सर्दियों में नकुरी। इन पहाड़ों पर चढ़ने और उतरने के अभ्यास ने बछेंद्री को मजबूत बनाया। सिलाई और दूसरे ऐसे की काम करके बछेंद्री अपना खर्चा निकाल कर पढ़ाई करती रही और डीएवी कालेज देहरादून से संस्कृत में एमए उत्तीर्ण किया। फिर नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी जाकर प्रशिक्षण लेने लगी। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने गंगोत्री और माणा सहित कई चोटियों पर चढ़ाई की। ■

> विश्व की अनेक चोटियां पर आरोहण करने के बाद बछेंद्री ने २३ मई, 1984 के दिन दोपहर एक बजकर सात मिनट पर जब माउंट एवरेस्ट की चोटी को चूमा तो वह विश्व के इस सबसे ऊंचे पर्वत पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बन गई।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:35 PM Page

जुबिन नौटियाल बॉलीवुड गायक

रैंक
34

छोटी सी उम्र में ही एक गायक के रूप में जुबिन नौटियाल ने बड़ा मुकाम हासिल किया है। बचपन से ही संगीत के प्रति लगाव होने के कारण उन्होंने अपनी पढ़ाई के दौरान संगीत को एक विषय के रूप में चुना। हिंदी फिल्म बजरंगी भाईजान में गाए गीत 'जिंदगी कुछ तो बता ने' उन्हें वह शोहरत दी है, जो कई वर्षों की तपस्या के बाद भी नहीं मिलती। उन्हें अब तक अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। खास बात यह है कि जुबिन सिर्फ बॉलीवुड की चमक-धमक तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि वह अपनी मातृबोली जौनसारी के गीतों को भी सामने लाने के प्रयास में लगे हुए हैं।

जुबिन ने फिल्मों में गायन की शुरूआत 2014 में की। कुछ एलबम में गाने के बाद फिल्म कुछ कुछ होता है उनका गाया गीत ना जाने तुमसे क्या है वास्ता काफी लोकप्रिय हुआ। इसके बाद वे बजरंगी भाईजान, किस किसको प्यार करूं, काबिल जैसी अनेक फिल्मों और कई टीवी सीरियलों में भी आवाज दे चुके हैं। जुबिन हालांकि मुंबई में व्यस्त हैं, लेकिन समय-समय पर वे उत्तराखंड आकर विभिन्न समारोहों में भी शिरकत करते हैं। मूल रूप से जौनसारी ब्राह्मण परिवार के जुबिन नौटियाल का जन्म 14 जून 1989 को देहरादून में हुआ। उनके पिता राम शरण नौटियाल व्यवसायी और राजनीतिज्ञ हैं।

जुबिन ने अपनी 8वीं कक्षा तक की पढ़ाई देहरादून में सेंट जोसेफ एकेडमी से की और उसके बाद वेल्हम ब्याइज स्कूल में चले गए। यहां उन्होंने संगीत को विषय के रूप में चुना और गायन एवं वादन की बारीकियां सीखी। उन्होंने कई वाद्ययंत्र भी सीखे। स्कूली शिक्षा के बाद वे मुंबई चले गए और नीताभाई कॉलेज में प्रवेश लिया। इस दौरान संगीतकार एआर रहमान से जुबिन की मुलाकात हुई और उन्होंने जुबिन को गायन के दिशा में लगातार आगे बढ़ने की सलाह दी। ■

> हिंदी फिल्म बजरंगी भाईजान में गाए गीत 'जिंदगी कुछ तो बता ने' उन्हें वह शोहरत दी है, जो कई वर्षों की तपस्या के बाद भी नहीं मिलती। उन्हें अब तक अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। जुबिन ने फिल्मों में गायन की शुरूआत 2014 में की।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:35 PM Page

रैंक
35

अद्वैता काला लेखिका

अद्वैता काला की पहचान किसी भी रूप में की जा सकती है। एक उपन्यासकार, स्क्रीनप्ले राइटर, सामाजिक कार्यकर्ता या कॉलमिस्ट। उन्हें अक्सर महिलाओं और सामाजिक सरोकार के मुद्दों पर टीवी की बहसों-मुबाहिसों में देखा जा सकता है। पौड़ी गढ़वाल के सुमाड़ी की यह बेटी बेस्ट सेलर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छपने वाली उपन्यासकार हैं। उनके पदार्पण उपन्यास आलमोस्ट सिंगल की अकेले भारत में ही डेढ़ लाख से अधिक प्रतियां बिकीं। इस उपन्यास का फ्रेंच, मराठी और हिंदी में अनुवाद हुआ है। अद्वैता का यह उपन्यास बेनटैम डिस्कवरी प्रोग्राम के लिए भी चयनित हो चुका है। यह प्रख्यात पब्लिशिंग प्रोग्राम रेंडम हाउस अमेरिका द्वारा संचालित किया जाता है। इस प्रोग्राम के तहत फिक्शन की नई प्रतिभाओं को अमेरिकी पाठकों से रूबरू करवाया जाता है। अद्वैता एक पुरस्कृत स्क्रीन राइटर हैं। उनकी पहचान अभिनेत्री विद्या बालन अभिनीत कहानी जैसी सुपरहिट थ्रिलर फिल्म की लेखिका के तौर पर भी है।

अद्वैता की लेखन शैली की खासियत यह है कि वह हर वर्ग की लेखिका हैं। उन्होंने जहां कहानी जैसी महिला प्रधान थ्रिलर लिखी वहीं अंजाना-अंजानी जैसी यूथ सेंट्रिक फिल्म और एयरलाइंस जैसे प्राइम टाइम टीवी सीरियल की पटकथा भी लिखी है। वह राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर कई अखबारों में कॉलम लिखती रही हैं। वहीं उनका फूड कॉलम भी काफी लोकप्रिय है। अब वह नॉन फिक्शन लेखन की ओर मुड़ी हैं। वह अपना नॉन फिक्शन डेब्यू द सेफरॉन ट्रेल से कर रही हैं। इसके जरिए वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को दुनिया के सामने लाएंगी। इसमें संघ के इतिहास और उससे जुड़े लोगों के वास्तविक जीवन की झांकी होगी। यही नहीं अद्वैता अपनी प्रतिशत को अगले पड़ाव पर ले जाते हुए डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर भी बन गई हैं। ■

> अद्वैता की लेखन शैली की खासियत यह है कि वह हर वर्ग की लेखिका हैं। उन्होंने जहां कहानी जैसी महिला प्रधान थ्रिलर लिखी वहीं अंजाना-अंजानी जैसी यूथ सेंट्रिक फिल्म और एयरलाइंस जैसे प्राइम टाइम टीवी सीरियल की पटकथा भी लिखी है। वह राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर कई अखबारों में कॉलम लिखती रही हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:35 PM Page

अनिल जोशी पर्यावरण, सामाजिक कार्यकर्ता

रैंक

36

पर्यावरणविद्, सामाजिक कार्यकर्ता और वनस्पति विज्ञानी डॉ. अनिल प्रकाश जोशी पिछले कई वर्षों से पहाड़ों में पर्यावरण जागरूकता और कृषि में ईको फ्रेंडली तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ ही अन्य सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं। उनकी गैर सरकार संस्थान 'हिमालयन इंवार्नमेन्टल स्टडीज एंड कंजर्वेशन आगेर्नाइजेशन' (हेस्को) इस क्षेत्र में लगातार शोध करने और ग्रामीणों को इन शोधों के प्रति जागरूक कराने में लगी हुई है। पर्यावरण और जनजारूकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें जमुनालाल बजाज और पद्मश्री जैसे सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। पहाड़ों के ईको फ्रेंडली विकास और यहां से पलायन रोकने के मुद्दे पर वे समय-समय पर अभियान चलाते रहते हैं। डॉ. जोशी ने जिन सामाजिक कार्यों में हिस्सा लिया उनमें महिलाओं के लिए तकनीकी पार्क की स्थापना, ईकोलॉजिकल फूड मिशन, स्थानीय वनस्पतियों से रोजगार आधारित कार्य, शौचालयों का निर्माण जैसे कार्य शामिल हैं। इन दिनों वे पहाड़ से पलायन रोकने के लिए 'गांव बचाओ अभियान' चला रहे हैं। इस अभियान के तहत वे पूरे उत्तराखंड में यात्राएं कर रहे हैं।

डॉ. जोशी के जन्म 6 अप्रैल 1955 को कोटद्वार (पौड़ी गढ़वाल) में हुआ था। उन्होंने वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद ईकोलोजी में पीएचडी की। इसके बाद राजकीय स्नोतकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार में अध्यापन का कार्य शुरू किया, किन्तु 1979 में उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और देहरादून में हेस्को की स्थापना की। अपनी संस्था में उन्होंने कृषि क्षेत्र में ऐसे शोध कार्य करवाने को प्राथमिकता दी जो ईको फ्रेंडली होने के साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में किसानों को अधिक उपज भी दे सकें। इन शोधों के माध्यम से विकसित की गई तकनीकी को अब तक वे 40 से अधिक गांवों के शुरू करवा चुके हैं। ■

" डॉ. अनिल प्रकाश जोशी पिछले कई वर्षों से पहाड़ों में पर्यावरण जागरूकता और कृषि में ईको फ्रेंडली तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ ही अन्य सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं। पर्यावरण और जनजारूकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें जमुनालाल बजाज और पद्मश्री जैसे सम्मान भी प्राप्त हुए हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

रैंक
37

महंत देवेंद्र दास दरबार साहिब, देहरादून

उ गुरु राम राय दरबार साहिब के सज्जादानशीं महंत देवेन्द्र दास को ब्रह्मलीन श्री महंत इंदिरेश चरण दास महाराज ने 10 फरवरी, 2000 को अपना शिष्य स्वीकार किया था। 15 मार्च 1971 में उत्तराखंड में जन्मे और एसजीआरआर एजुकेशन मिशन के चेयरमैन महंत देवेंद्र दास की सफलता की कहानी श्री गुरुराम राम मेडिकल कॉलेज और महंत इंदिरेश अस्पताल के जिक्र के बिना अधूरी है। श्री गुरुराम राम मेडिकल कॉलेज में 1000 बेड का मल्टीस्पेशियलिटी और सुपरस्पेशियलिटी अस्पताल है। इस अस्पताल की शुरूआत महंत देवेंद्र दास के दरबार साहिब के सज्जादानशीं होने के दो वर्ष बाद हुई। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की मंजूरी के बाद शुरू हुए इस अस्पताल ने 2006 में अपने पहले एमबीबीएस बैच को शुरू किया। इसे मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से मान्यता मिली हुई है। इस मेडिकल कॉलेज में वर्ष 2011 से एमडी और एमएस के कोर्स भी कराए जा रहे हैं। श्री गुरुराम राय दरबार साहिब सिखों के उदासीन पंथ का केंद्र है। सिखों के सातवें गुरु श्री हर राय जी के सबसे बड़े बेटे गुरुराम राय जी ने हिंदुत्व की परंपरा, आदर्शों एवं दर्शन के संरक्षण एवं विस्तार के लिए देहरादून में इसकी स्थापना की। 1676 में उन्होंने दून घाटी में अपना डेरा स्थापित किया। पूरी दून घाटी गुरु महाराज की संपत्ति थी। अंग्रेजों को भी दरबार साहिब की मंजूरी के बाद ही यहां आने की इजाजत थी। दरबार साहिब की इमारत इस्लामिक और हिंदू शिल्प का बेजोड़ नमूना है। श्री महंत इंदिरेश चरण दास जी दरबार साहिब के नौंवे महंत बने। उन्होंने 1952 में श्री गुरु राम राय एजुकेशन मिशन की स्थापना की। देवेंद्र दास जी दरबार साहिब के दसवें महंत हैं। श्री गुरु राम राय एजुकेशन मिशन के उत्तर भारत में कुल 122 संस्थान हैं। महंत देवेंद्र दास के प्रयासों से मिशन ने आर्गेनिक खेती की शुरूआत की है। साथ ही मिशन एक बायोटेक्नोलॉजी पार्क का निर्माण कर रहा है। ■

"महंत देवेन्द्र दास को ब्रह्मलीन श्री महंत इंदिरेश चरण दास महाराज ने 10 फरवरी, २००० को अपना शिष्य स्वीकार किया था। एसजीआरआर एजुकेशन मिशन के चेयरमैन महंत देवेंद्र दास की सफलता की कहानी श्री गुरुराम राम मेडिकल कॉलेज और महंत इंदिरेश अस्पताल के जिक्र के बिना अधूरी है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

डॉ. नवीन जुयाल

भूवैज्ञानिक, ग्लेशियोलिस्ट

रैंक

38

भूगर्भ विज्ञान के क्षेत्र में ख्यातिलब्ध वैज्ञानिक डॉ. नवीन जुयाल फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी अहमदाबाद में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के 'नेशनल जियो साइंस अवार्ड' से सम्मानित किया जा चुका है। हिमालयी ग्लेशियरों पर उनका कार्य पूरी दुनिया में अपनी तरह का अनूठा कार्य है। इसे कई मंचों पर सराहा गया है। वे संयुक्त राष्ट्र वैज्ञानिक समूह के सदस्य के रूप में भी नामित हैं। डॉ. जुयाल पहाड़ के उन सपूतों में शामिल हैं, जो यहां के एक छोटे से गांव ने निकलकर आज अपने कार्यों के कारण पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। भूगर्भ विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया, उससे पूरी दुनिया उनका लोहा मानती है। वे हिमालयी ग्लेशियरों के विशेषज्ञ माने जाते हैं। कैलाश मानसरोवर ग्लेशियरों को लेकर उनके शोधकार्य ने न सिर्फ पूरे विश्व में उन्हें महान वैज्ञानिक के रूप में प्रतिष्ठित किया, बल्कि इस शोध के माध्यम से हिमालयी ग्लेशियरों के अध्ययन का कार्य आगे बढ़ाने में भी सहायता मिली। उन्होंने मध्य हिमालय, थार मरुस्थल और दक्षिण भारत के तटवर्ती क्षेत्रों की भू संरचना पर भी उल्लेखनीय अध्ययन किया। उल्लेखनीय कार्य के लिए उन्हें विज्ञान के सर्वोच्च पुरस्कार नेशनल जियो साइंस अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

उन्होंने पांच वर्षों तक पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट के साथ अलकनंदा घाटी के सुदूवर्ती गांवों में ग्रामीण विकास और हरियाली बढ़ाने के लिए भी कार्य किया। उत्तराखंड में जन्मे डॉ. जुयाल ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई गांव के ही स्कूल से की और बाद में उच्च शिक्षा के लिए हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय आ गए। यहां उन्होंने वर्ष 1981 में भूगर्भ विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की और फिर अहमदाबाद स्थित फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी से अर्थ साइंस में डाक्टरेट किया। इसके बाद कुछ वर्षों तक वे पहाड़ में पर्यावरण और विकास का कार्य करते रहे। ■

> ख्यातिलब्ध वैज्ञानिक डॉ. नवीन जुयाल फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी अहमदाबाद में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के 'नेशनल जियो साइंस अवार्ड' से सम्मानित किया जा चुका है। हिमालयी ग्लेशियरों पर उनका कार्य पूरी दुनिया में अपनी तरह का अनूठा कार्य है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

डॉ. विजय धस्माना

वीसी स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी

रैंक

39

क्रिएटिव तरीके से कम लागत वाले स्वास्थय देखभाल, शिक्षा और सामाजिक विकास के मॉडल को उत्तराखंड के लोगों के उत्थान के लिए लागू करने की दिशा में काम करने के लिए डॉ. विजय धस्माना प्रख्यात हैं। वह इस समय स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर हैं। डॉ. धस्माना ने हिमालयन इंस्टीट्यूट को 1996 में बतौर कोषाध्यक्ष ज्वाइन किया था। इस संस्थान की स्थापना गुरूदेव श्री स्वामी राम ने की थी। 1996 में डॉ. धस्माना को संस्थान की शीर्ष संस्था का सदस्य बनाया गया। 2007 से 2013 के बीच वह एचआईएचटी यूनिवर्सिटी के चांसलर रहे। इसके बाद उन्हें 2013 में स्वामी रामा हिमालय यूनिवर्सिटी का चांसलर बनाया गया। 1996 में जब गुरूदेव श्री स्वामी राम का महाप्रयाण हुआ था, तब हिमालयन हॉस्पिटल 350 बेड का था और इसका मेडिकल कॉलेज शुरू ही हुआ था। लेकिन डॉ. धस्माना ने अपने कुशल नेतृत्व से इसे यूनिवर्सिटी में तब्दील कर दिया। आज यह 1000 बेड का हास्पिटल है। यहां 250 बेड का कैंसर संस्थान है। इसके अलावा आयुर्वेद केंद्र भी है, इसका ग्रामीण विकास संस्थान पहाड़ के 1000 गांवों में शिक्षा, पानी और साफ-सफाई के क्षेत्र में काम कर रहा है। गढ़वाल क्षेत्र के 325 गांवों में पीने का साफ पानी मुहैया करा रहा है। यूनिवर्सिटी एमबीबीएस और पीजी मेडिकल कोर्स करवा रही है। साथ एक पीजी नर्सिंग कालेज का संचालन भी किया जा रहा है। पौड़ी के दुधारखाल के मल्ला बादलपुर के तोली गांव में 23 अक्टूबर 1968 को जन्में डॉ. धस्माना ने अपनी शुरूआती पढ़ाई गांव से ही की। इसके बाद वह ऋषिकेष आ गए। ऋषिकाष से बीएससी और एमएससी (गणित) में करने के बाद डा धस्माना ने एमएससी कम्प्यूटर साइंस से की। उन्होंने यह डिग्री यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से की। इसके बाद डा धस्माना ने गणित में पीएचडी की। डॉ. धस्माना की पत्नी डॉ. रेनु धस्माना प्रख्यात रेटीना सर्जन हैं। उनके दो बच्चे वैभवी और विदिप्त हैं। ■

> डॉ. धस्माना को 2013 में स्वामी रामा हिमालय यूनिवर्सिटी का चांसलर बनाया गया। 1996 में जब गुरूदेव श्री स्वामी राम का महाप्रयाण हुआ था, तब हिमालयन हॉस्पिटल 350 बेड का था और इसका मेडिकल कॉलेज शुरू ही हुआ था। आज यह 1000 बेड का हास्पिटल है। यहां 250 बेड का कैंसर संस्थान है।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

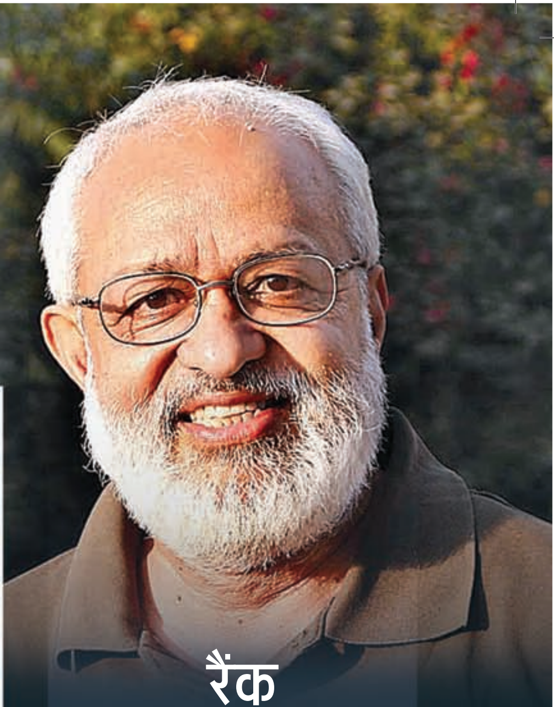

प्रो. पुष्पेश पंत राजनीतिक विश्लेषक

रैंक

40

भारत की आजादी के साल यानी 1947 में जन्मे पुष्पेश पंत किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। खाने के शौकीन उन्हें फूड क्रिटिक, इतिहास के छात्र जानेमाने इतिहासकार एवं भारतीय शिक्षाविद् और आम जनता उन्हें अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ के तौर पर जानती और पहचानती है। भारतीय पकवान के भी वह अच्छे जानकार हैं। तमाम पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। फोर्ब्स, ओपेन, आउटलुक, टाइम्स ऑफ इंडिया और द ट्रिब्यून जैसे दर्जनों अखबारों एवं पत्रिकाओं में वह बतौर स्तंभकार लिखते रहते हैं।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय में उन्होंने तीन दशक से ज्यादा समय तक अध्यापन कार्य किया। वे अंतरराष्ट्रीय संबंध के प्रोफेसर रहे और अब रिटायर हो चुके हैं। इस दौरान उनके मार्गदर्शन में 25 विद्यार्थियों ने पीएचडी और 75 ने एमफिल की डिग्री हासिल की। उन्होंने कई सरकारी समितियों और मंत्रालयों की परिषद में भी अपनी अहम भूमिका निभाई। यही नहीं, आईएफएस इंस्टीट्यूट के लिए भारतीय विदेश नीति पर उन्होंने बेसिक कोर्स भी तैयार किया। वह लखनऊ विश्वविद्यालय और नई दिल्ली स्थित इंडियन एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल लॉ एंड डिप्लोमेसी में विजिटिंग प्रोफेसर रहे। 2011 में आई उनकी किताब द कुकबुक को अमेरिका के प्रतिष्ठित अखबार द न्यूयॉर्क टाइम्स ने साल की सबसे बेहतरीन कुकबुक में से एक बताया था। 2016 में भारत सरकार ने समाज में उनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए पद्मश्री से सम्मानित किया। प्रोफेसर पंत ने यात्रा और पर्यटन पर करीब एक दर्जन किताबें लिखीं। उत्तराखंड के कई सरकारी कार्यक्रमों में उनकी विशेष भूमिका रही। उनका जन्म नैनीताल में हुआ था। प्रो. पंत पांच दशकों से लेखन कार्य में लगे हैं। ■

"जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय में उन्होंने तीन दशक से ज्यादा समय तक अध्यापन कार्य किया। वे अंतरराष्ट्रीय संबंध के प्रोफेसर रहे और अब रिटायर हो चुके हैं। इस दौरान उनके मार्गदर्शन में 25 विद्यार्थियों ने पीएचडी और 75 ने एमफिल की डिग्री हासिल की।

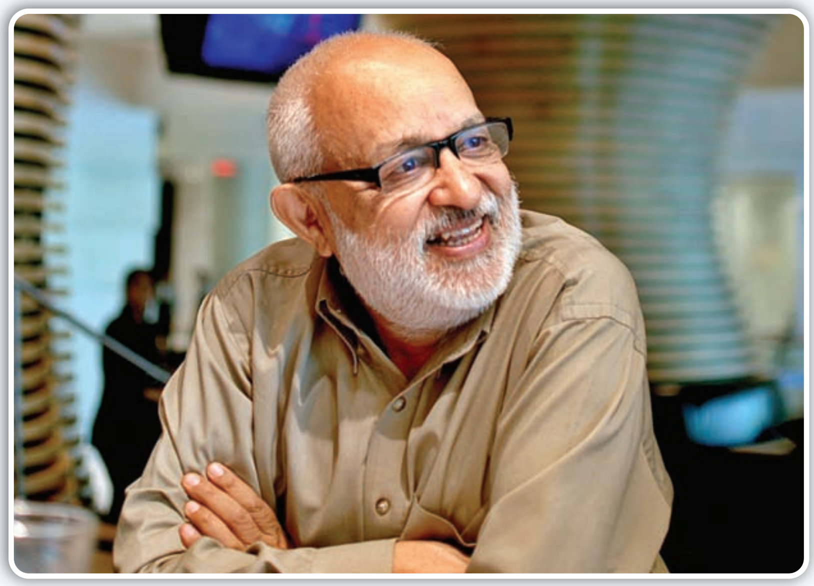

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

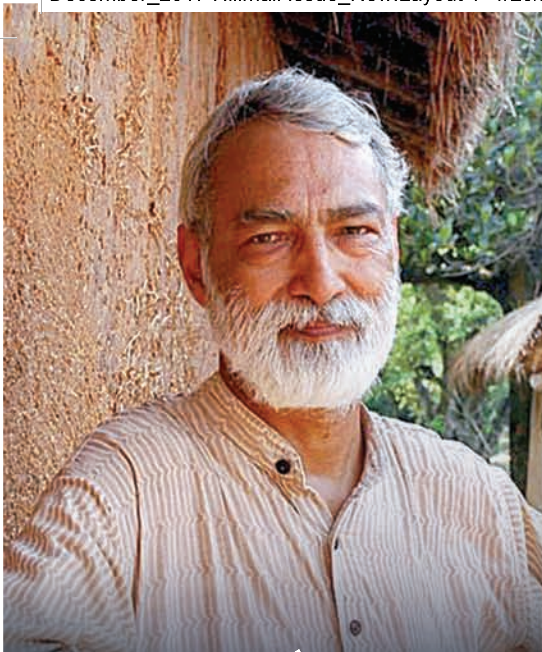

दीप जोशी सामाजिक कार्यकर्ता

रैंक
41

समाज सेवा के क्षेत्र में दीप जोशी ने जो मुकाम हासिल किया वह बहुत कम लोगों को हासिल हो पाता है। मैग्सेसे पुरस्कार विजेता दीप जोशी ने पढ़ाई बेशक इंजीनिरिंग से की, लेकिन पढ़ाई पूरी करते ही वे सामाजिक कार्यों से जुड़ गए। दीप जोशी के सामाजिक कार्यों को देखते हुए उन्हें अनेक पुरस्कार भी मिले। वर्ष 2006 में उन्हें मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जबकि सन 2016 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्तमान वे इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आनंद के चेयरमैन हैं और लगातार सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए हैं। इस पद पर उनका चयन वर्ष 2012 में हुआ।

1983 वे प्रदान नामक एनजीओ से प्रोफेशनल एसिस्टेंट के रूप में जुड़े और ग्रामीण विकास तथा गरीबी उन्मूलन को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। इस संगठन में देशभर के अनेक विश्वविद्यालयों के छात्रों को भर्ती करके उन्हें सामुदायिक और सामाजिक कार्यों का जमीनी स्तर का प्रशिक्षण दिया गया। सामाजिक कार्यों में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान को वर्ष 2006 में एनजीओ आफ द ईयर के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। बाद में प्रदान ने एक स्वयं सहायता समूह के रूप में कार्य किया। उन्होंने गरीबी उन्मूलन के लिए भारत सरकार को महत्वपूर्ण सुझाव दिये और कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए काम करने वाले 11वीं पंचवर्षीय योजना आयोग के सदस्य भी रहे। दीप जोशी का जन्म 1947 में पिथौरागढ़ जनपद के एक अत्यन्त पिछड़े गांव पुरियाग में एक किसान परिवार में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गांव और आसपास के क्षेत्रों में प्राप्त करके उन्होंने मोतीलाल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी इलाहाबाद से इंजीनिरिंग में डिग्री प्राप्त की और विदेशों में इंजीनियरिंग की आगे की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद लंबे समय तक फोर्ड फाउंडेशन में रह कर वह सामाजिक कार्यक्रमों का हिस्सा बनते रहे। ■

वर्ष 2006 में उन्हें मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जबकि सन 2016 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्तमान वे इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आनंद के चेयरमैन हैं और लगातार सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए हैं। इस पद पर उनका चयन वर्ष 2012 में हुआ।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

डॉ. नवीन बलूनी

सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तराखंड

रैंक
42

बलूनी क्लासेज और बलूनी स्कूल आज उत्तराखंड में किसी प रिचय का मोहताज नहीं हैं। यही वजह है कि उत्तराखंड में मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र रावत ने पद्भार संभालने के बाद बलूनी ग्रुप ऑफ एजुकेशन के चेयरमैन डॉ नवीन बलूनी को पॉलिसी प्लानिंग ग्रुप में सलाहकार नामित किया। पौड़ी जिले से ताल्लुक रखने वाले डा. बलूनी उत्तराखंड में विभिन्न शिक्षण संस्थाएं संचालित कर रहे हैं। देहरादून में उन्होंने सोशल बलूनी पब्लिक स्कूल स्थापित किया है। बलूनी क्लासेज जहां एक ओर छात्रों को डॉक्टर और इंजीनियर बनाने में जुटा हैं वहीं बलूनी स्कूल छात्रों को गुणवत्तापरक शिक्षा दे रहा है। यह पहला ऐसा स्कूल है जिसने गढ़वाली पाठ्यक्रम तैयार किया है। पेशे से चिकित्सक डा. बलूनी ने मेडिकल फील्ड के बजाय शिक्षा के क्षेत्र में कुछ करने के इरादे से आगरा में बलूनी क्लासेज की शुरूआत की। बच्चों की संख्या बढ़ने पर उन्होंने अपने भाई बिपिन को भी साथ ले लिया। इसके बाद दोनों भाइयों ने 2006 में उत्तराखंड का रुख किया। देहरादून में 30 बच्चों के साथ बलूनी क्लासेज शुरू की और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। 2011 में कोटद्वार में बलूनी पब्लिक स्कूल खोला और फिर देहरादून में भी यह स्कूल शुरू किया। आज देहरादून में बलूनी पब्लिक स्कूल की गिनती शीर्ष शिक्षण संस्थानों में होती है।

पौड़ी के पट्टी अजमेर के बागी गांव से आए नवीन बलूनी का चयन 1992 में एमबीबीएस के लिए हुआ था। अक्सर देहरादून की सड़कों पर साइकिल चलाते दिखने वाले डा. नवीन बलूनी को अपने प्रयोगों के लिए जाना जाता है। उन्होंने उत्तराखंड के गरीब मेधावी छात्रों को इंजीनियरिंग और मेडिकल की मुफ्त कोचिंग के लिए सुपर-50 का कांसेप्ट लांच किया। सुपर-50 के तहत 50 गरीब मेधावी छात्रों का चयन किया जाता है। इनमें से 25 छात्रों को इंजीनियरिंग और 25 छात्रों को मेडिकल की कोचिंग मुफ्त कराई जाती है। ■

अक्सर देहरादून की सड़कों पर साइकिल चलाते दिखने वाले डा. नवीन बलूनी को अपने प्रयोगों के लिए जाना जाता है। उन्होंने उत्तराखंड के गरीब मेधावी छात्रों को इंजीनियरिंग और मेडिकल की मुफ्त कोचिंग के लिए सुपर-50 का कांसेप्ट लांच किया।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:36 PM Page

एकता बिष्ट क्रिकेटर

रैंक

43

छोटी कदकाठी की एकता बिष्ट का खेल कितना बड़ा है, इसका अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की साल 2017 की वनडे और टी-20 टीम दोनों में जगह बनाने वाली इकलौती भारतीय खिलाड़ी हैं। टीम को चुनने वाली चयन समिति ने इस लेफ्ट आर्म स्पिनर को भारतीय टीम की कप्तान मिताली राज और हरमनप्रीत कौर जैसी धुरंधर खिलाड़ियों पर तरजीह दी। मिताली को जहां सिर्फ वनडे टीम में चुना गया है वहीं हरमनप्रीत को टी-20 में जगह मिली है। अल्मोड़ा की एकता के करियर का सबसे शानदार प्रदर्शन विश्वकप में पाकिस्तान के खिलाफ किया गया चमत्कारी स्पैल था। वह लो स्कोरिंग मैच में 18 रन पर 5 विकेट झटककर मैन ऑफ द मैच बनी थीं। 31 साल की एकता ने इस मुकाम तक पहुंचने में कड़ी मेहनत की है। भारतीय सेना के हवलदार के पद से रिटायर कुंदन लाल बिष्ट को 1988 में 1500 रुपये पेंशन मिलती थी। इसी में उन्हें तीन बच्चों का पालन पोषण करना था। अपनी कमाई बढ़ाने और बेटी के सपनों को उड़ान देने के लिए उन्होंने अल्मोड़ा में चाय की दुकान खोली। एकता को क्रिकेट इतना भाता था कि वह लड़कों के साथ खेलती। 2006 में एकता उत्तराखंड क्रिकेट टीम की कप्तान बनीं। 2007 से 2010 तक वह उत्तर प्रदेश के लिए भी खेली। 2011 में एकता को पहली बार भारतीय टीम की जर्सी मिली। उन्हें इस वर्ष के उत्तराखंड खेल रत्न पुरस्कार के लिए चुना गया है। एकता ने जून 2011 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 क्रिकेट से अंतरराष्ट्रीय कैरियर की शुरूआत की। उन्होंने जुलाई 2011 में वनडे और अगस्त 2014 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया। 46 अंतरराष्ट्रीय वन डे मैचों में एकता के नाम 71 विकेट हैं। 36 टी-20 में एकता ने 45 विकेट चटकाए हैं। एकता टी-20 विश्व कप क्वालीफायर में हैट्रिक करने वाली पहली भारतीय महिला गेंदबाज हैं। ■

"२००६ में एकता उत्तराखंड क्रिकेट टीम की कप्तान बनीं। २००७ से २०१० तक वह उत्तर प्रदेश के लिए भी खेली। २०११ में पहली बार भारतीय टीम की जर्सी मिली। उन्हें इस वर्ष के उत्तराखंड खेल रत्न पुरस्कार के लिए चुना गया है। एकता ने जून २०११ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-२० क्रिकेट से अंतरराष्ट्रीय कैरियर की शुरूआत की।

ओपी भट्ट

स्वतंत्र निदेशक, टाटा मोटर्स

रैंक 44

ठेठ पहाड़ी गांव से ताल्लुक रखने वाले ओपी भट्ट को टाटा मोटर्स ने पांच साल के लिए बोर्ड का अतिरिक्त और स्वतंत्र निदेशक नियुक्त किया है। इससे पहले, उन्हें साइरस मिस्त्री के हटने के बाद टाटा स्टील का अंतरिम चेयरमैन बनाया गया था। बैंकिंग सेवा में लंबे समय तक रहे भट्ट 2011 में भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंध निदेशक के पद से रिटायर्ड हुए। वह फिलहाल मुंबई में रहते हैं। उन्हें पहले टाटा स्टील का अंतरिम चेयरमैन बनाया जाना और फिर टाटा मोटर्स के बोर्ड में शामिल किया जाना उत्तराखंड के लिए गौरव की बात है। इससे पहले, वह 2011 में तेल एवं प्राकृतिक गैस कार्पोरेशन के स्वतंत्र निदेशक बनाए गए थे। 1972 में उनका चयन भारतीय स्टेट बैंक में पीओ के पद पर हुआ। उन्हें पहली तैनाती मुंबई में मिली और बाद में उन्हें लंदन भेज दिया गया। लंदन से लौटकर देशभर में बैंक की नौकरी करते हुए वह बैंकिंग सेवा को बेहतर बनाने की दिशा में लगातार अध्ययन करते रहे। जनवरी 2005 में उन्हें स्टेट बैंक ऑफ त्रावणाकोर का प्रबंध निदेशक बनाया गया। 2006 में वह भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंध निदेशक बनाए गए। एसबीआई में प्रबंध निदेशक रहते हुए उन्होंने बैंकों में अनेक सुधार कार्यक्रम लागू किए। जिस कारण भारतीय स्टेट के कुल लाभ में इजाफा हुआ। भट्ट का जन्म सात मार्च 1951 को देहरादून में हुआ था। उनका परिवार मूल रूप से पौड़ी जिले के भटगांव से है। उनके पिता देहरादून में सर्वे ऑफ इंडिया में राजपत्रित अधिकारी थे। उन्होंने सेंट जोसेफ एकेडमी से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद डीएवी कॉलेज से विज्ञान में स्नातक की उपाधि ली। इसके बाद उन्होंने अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और मेरठ विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। भट्ट टाटा स्टील के पहले गैर पारसी चेयरमैन रहे। टाटा स्टील के इतिहास में अभी तक जितने भी चेयरमैन रहे, वे सभी पारसी समुदाय से थे। ■

> भट्ट 2011 में भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंध निदेशक के पद से रिटायर्ड हुए। उन्हें पहले टाटा स्टील का अंतरिम चेयरमैन बनाया जाना और फिर टाटा मोटर्स के बोर्ड में शामिल किया जाना उत्तराखंड के लिए गौरव की बात है। इससे पहले, वह 2011 में तेल एवं प्राकृतिक गैस कार्पोरेशन के स्वतंत्र निदेशक बनाए गए थे।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

रस्किन बांड लेखक

रैंक
45

ब्रिटिश मूल के अंग्रेजी लेखक रस्किन बांड भारत के महान अंग्रेजी लेखकों में गिने जाते हैं। जीवन के शुरूआती वर्षों में वह एक बार देहरादून आए तो वहीं के होकर रह गये। 1963 से रस्किन बांड मसूरी के लंढौर क्षेत्र में अपने परिवार के साथ रहते हैं और लगातार साहित्य साधना करते हैं। उन्हें साहित्य अकादमी, पद्मश्री और पद्मभूषण जैसे पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

रस्किन बांड ने अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों की रचना की। उनके लेखन आमतौर पर देहरादून के मैदानों और मसूरी की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द घूमता हैं। अनेक नामधन्य प्रकाशकों ने उनकी रचनाओं का प्रकाशन किया। आज भी वे अक्सर मसूरी में एक किताबों की दुकान पर मिल जाते हैं और दुकान पर आने वाले बच्चों को ऑटोग्राफ देने के साथ ही साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। रस्किन बांड में दर्जनों उपन्यास लिखे और दूसरी विधाओं में भी लेखन किया। उनकी रचनाओं पर बॉलीवुड फिल्मे भी बनी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर लिखे उनके उपन्यास पर बॉलीवुड में जुनून फिल्म बनी, इसके अतिरिक्त दूरदर्शन पर उनकी कहानियों पर आधारित एक था रस्टी धारावाहिक भी प्रसारित हुआ।

रस्किन बांड का जन्म 19 मई 1934 को पंजाब स्टेट के कसौली में एक मिलिट्री अस्पताल में हुआ था। उनके पिता रायल एयर फोर्स में तैनात थे। पिता से अलग होने के बाद रस्किन अपनी माता के साथ पंजाब में एक हिंदू परिवार में कुछ समय रहे और बाद में अपनी नानी के यहां देहरादून आ गए। उनका बचपन जामनगर (गुजरात) और शिमला में बीता। शिमला के बिशप चर्च स्कूल से उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की और बाद में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भी गये। पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने लेखन कार्य शुरू किया और कई पुरस्कार भी प्राप्त किए। ■

"रस्किन बांड ने दर्जनों उपन्यास लिखे और दूसरी विधाओं में भी लेखन किया। उनकी रचनाओं पर फिल्मे भी बनी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर लिखे उनके उपन्यास पर बॉलीवुड में जुनून फिल्म बनी, दूरदर्शन पर उनकी कहानियों पर आधारित एक था रस्टी धारावाहिक भी प्रसारित हुआ।

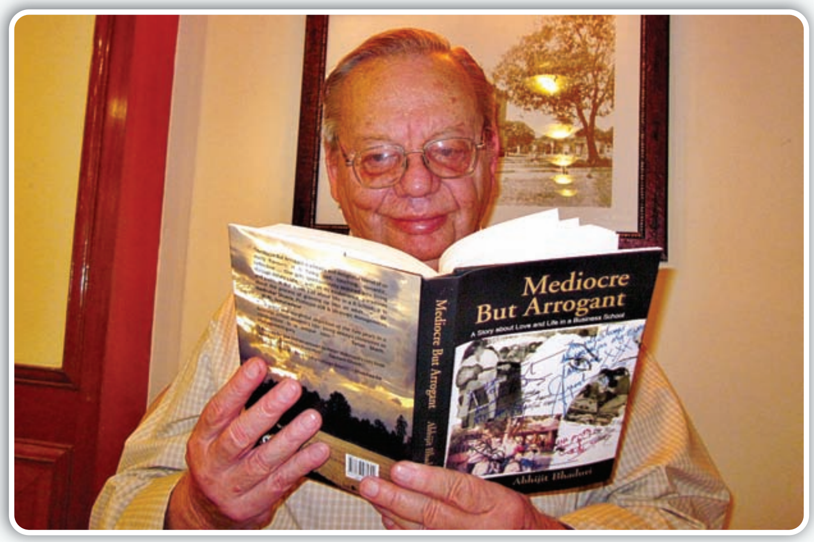

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

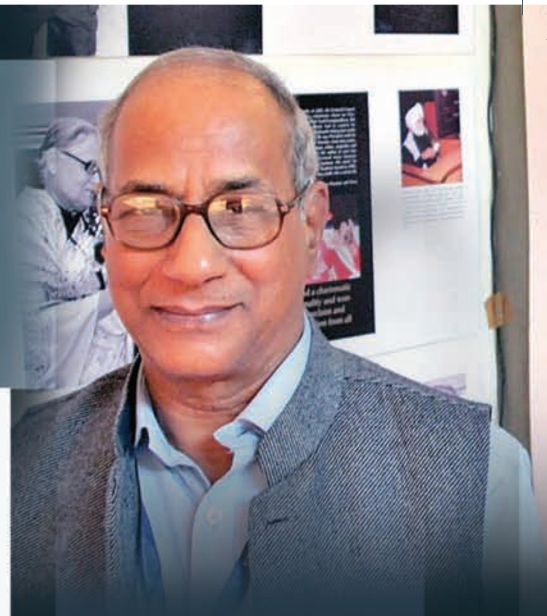

मंगलेश डबराल कवि

मंगलेश डबराल समकालीन हिंदी कवियों में सबसे चर्चित नाम हैं। हिंदी कविता के साथ ही उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफी ख्याति प्राप्त है। उनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जबकि अनेक समाचार पत्रों में भी वह महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। डबराल वर्तमान में दिल्ली में रहकर साहित्य साधना में रत हैं। मंगलेश डबराल के पांच काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं- पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है और नए युग में शत्रु। इसके अतिरिक्त इनके दो गद्य संग्रह लेखक की रोटी और कवि का अकेलापन के साथ ही एक यात्रावृत्त एक बार आयोवा भी प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें अनेक सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। दिल्ली हिंदी अकादमी के साहित्यकार सम्मान, कुमार विकल स्मृति पुरस्कार और अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना 'हम जो देखते हैं' के लिए साहित्य अकादमी द्वारा 2000 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मंगलेश डबराल की ख्याति प्राप्त अनुवादक के रूप में भी प्रसिद्ध है। मंगलेश की कविताओं के भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, डच, स्पेनिश, पुर्तगाली, इतालवी, फ्रांसीसी, पोलिश और बुल्गारियाई भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। कविता के अतिरिक्त वे साहित्य, सिनेमा, संचार माध्यम और संस्कृति के विषयों पर नियमित लेखन भी करते हैं। मंगलेश की कविताओं में सामंती बोध एवं पूंजीवादी छल-छद्म दोनों का प्रतिकार है। डबराल का जन्म 16 मई 1948 को टिहरी गढ़वाल के काफलपानी गांव में हुआ था, इनकी शिक्षा-दीक्षा देहरादून में हुई। दिल्ली जाकर हिंदी पैट्रियट, प्रतिपक्ष और आसपास में काम करने के बाद वह भोपाल में मध्यप्रदेश कला परिषद्, भारत भवन से प्रकाशित साहित्यिक त्रैमासिक 'पूर्वाग्रह' में सहायक संपादक रहे। इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित अमृत प्रभात में भी कुछ दिन नौकरी की। 1983 में जनसत्ता में साहित्य संपादक का पद संभाला। ■

रैंक
46

“मंगलेश डबराल के पांच काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है और नए युग में शत्रु। इनके दो गद्य संग्रह लेखक की रोटी और कवि का अकेलापन के साथ ही एक यात्रावृत एक बार आयोवा भी प्रकाशित हो चुके हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page 50

ले कमांडर वर्तिका जोशी नौसैन्य अधिकारी

रैंक
47

लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी, भारत की छह बेटियां एक छोटी सी नौका से इन दिनों सागर मंथन कर रही है। यह मिशन 21,600 नॉटिकल मील से ज्यादा की यात्रा करने का है। कल्पना से रोमांचित करने देने वाले इस मिशन को नाविका सागर परिक्रमा नाम दिया गया है। इस नौका गश्ती दल की कमान संभाल रही हैं उत्तराखंड की बेटी लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी। दस सितंबर से ये दल आईएनएसवी तारिणी से अपने मिशन पर रवाना हुआ। यह मिशन महिलाओं द्वारा समुद्री मार्ग से धरती का चक्कर लगाने का पहला प्रयास है। लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी की स्कूली शिक्षा-दीक्षा श्रीनगर गढ़वाल और ऋषिकेश से हुई है। उनके पिता पीके जोशी गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर के शिक्षा विभाग के प्रोफेसर हैं। जबकि उनकी माता अल्पना जोशी राजकीय महाविद्यालय ऋषिकेश में हिंदी विभाग की अध्यक्ष हैं। 2010 में वर्तिका नौसेना में अधिकारी बनी थी। उन्होंने एमिटी विवि से एरोस्पेस इंजीनियरिंग में बीटेक और आईआईटी दिल्ली से एमटेक किया। नौसेना में भर्ती होने के बाद वह ब्राजील के रियो डि जिनोरियो से दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन तक पांच हजार नॉटिकल मील का समुद्री अभियान तय कर चुकी हैं। नेवी में जाने के बाद से ही वर्तिका नौसेना के साहसिक अभियानों में लगातार शामिल होती रहीं। इस मिशन के भी चार पड़ाव हैं, फ्रीमैंटल (ऑस्ट्रेलिया), लायटलटन (न्यूजीलैंड), पोर्ट स्टैनले (फॉकलैंड) और केपटाउन (दक्षिण अफ्रीका) रवाना होने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद इस टीम से मुलाकात की। यही नहीं अपने कार्यक्रम मन की बात में इस मिशन का जिक्र किया ता। उन्होंने वर्तिका जोशी को हिमालय की बेटी कहते हुए संबोधित किया और कहा कि देश की बेटियों का यह अभियान पूरी दुनिया में साहस, हौसले और जज्बे की एक नई इबारत लिखेगा। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण खुद अभियान को हरी झंडी दिखाने 10 सितंबर को गोवा पहुंची थीं। ■

“ २010 में वर्तिका नौसेना में अधिकारी बनी थी। उन्होंने एमिटी विवि से एरोस्पेस इंजीनियरिंग में बीटेक और आईआईटी दिल्ली से एमटेक किया। नौसेना में भर्ती होने के बाद वह ब्राजील के रियो डि जिनोरियो से दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन तक पांच हजार नॉटिकल मील का समुद्री अभियान तय कर चुकी हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

प्रो. अशोक डिमरी जेएनयू

रैंक
48

उत्तराखंड में सतत विकास की वकालत करने वाले जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इनवॉयरमेंटल साइंसेज में प्रोफेसर अशोक प्रियदर्शन डिमरी के नाम से वो लोग अच्छी तरह परिचित हैं, जिनका सरोकार जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों से है। डिमरी के इस विषय पर कई पेपर अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। डिमरी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1989 में बीएससी (फिजिक्स) से की। इसके बाद उन्होंने बीएचयू से ही 1992 में एमएससी जियोफिजिक्स (मौसमविज्ञान) की शिक्षा हासिल की। 1994 में उन्होंने जेएनयू से इनवॉयरमेंटल साइंसेज में एमफिल किया। डिमरी ने आईआईटी दिल्ली से अपनी पीएचडी एटमोस्फेरिक साइंसेज में की है। वह अप्रैल 1994 से 2008 के बीच रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) में स्नो एंड एवलांच साइंटिस्ट रहे। डिमरी वर्ष 2009 से दून यूनिवर्सिटी, देहरादून में विजिटिंग फैकल्टी हैं। वह जापान के नगोया स्थित हाइड्रोसफेरिक एटमॉसफेरिक रिसर्च सेंटर में सितंबर 2010 से अगस्त 2012 तक अनुसंधानकर्ता रहे हैं। इससे पहले वह ब्रिटेन के नोरविक में यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्ट एंगलिया की क्लाइमेट रिसर्च यूनिट में एसोसिएट फेलो रहे हैं। उत्तराखंड के चमोली से आने वाले डिमरी के अनुसंधान के विषय जलवायु परिवर्तन पर केंद्रित रहे हैं। उनके शोध के विषयों में क्षेत्रीय जलवायु गतिशीलता, बदलाव एवं परिवर्तनशीलता, जलवायु एवं जलवायु परिवर्तन का विज्ञान, भारत का शीतकालीन मानसून एवं पश्चिमी विक्षोभ। डिमरी को वर्ष 2014-15 के लिए कॉमनवेल्थ स्कॉलरशिप आयोग की ओर से मिलने वाली कॉमनवेल्थ एकेडमिक फेलोशिप मिल चुका है। डिमरी इंडियन जियोफिजिकल यूनियन के 2014-16 के बीच चुने हुए काउंसिल मेंबर रह चुके हैं। 2006 में उन्हें डीआरडीओ की ओर से टेक्नोलॉजी अवार्ड प्रदान किया गया। इसके अलावा रक्षा मंत्रालय की ओर से सियाचिन मेडल भी दिया जा चुका है। ■

"वह जापान के नगोया स्थित हाइड्रोसफेरिक एटमॉसफेरिक रिसर्च सेंटर में सितंबर २०१० से अगस्त २०१२ तक अनुसंधानकर्ता रहे हैं। इससे पहले वह ब्रिटेन के नोरविक में यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्ट एंगलिया की क्लाइमेट रिसर्च यूनिट में एसोसिएट फेलो रहे हैं।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

अमित नेगी

वित्त एवं आपदा प्रबंधन सचिव, उत्तराखंड

रैंक

49

उत्तराखंड के वित्त एवं आपदा प्रबंधन सचिव अमित नेगी को शासकीय कार्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित, कर्मठ, लग्नशील एवं ईमानदार अधिकारी माना जाता है। केदारनाथ के पुनर्निर्माण एवं आपदा प्रबंधन कार्यों में तेजी से फैसले लेने की खूबी ने उनकी छवि एक टॉस्क मास्टर अधिकारी की बनाई। अमित नेगी 1999 बैच के उत्तराखंड काडर के आईएएस अधिकारी हैं। पिता बलराम सिंह नेगी प्रोफेसर रहे तो यह तय था कि भविष्य की दशा-दिशा किसी शासकीय पद की ओर ही अग्रसर होगी। अमित नेगी का जन्म पौड़ी गढ़वाल में हुआ। उन्होंने देहरादून के कैंबियन हॉल से अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। बचपन से मेधावी छात्र रहे अमित नेगी ने आईआईटी कानपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बीटेक करने के बाद सिविल सेवा में जाने का फैसला किया और पहले ही प्रयास में आईएएस बन गए। अमित नेगी की पहली पोस्टिंग बतौर संयुक्त मजिस्ट्रेट रुड़की में हुई। फिर उन्होंने पहले चंपावत और फिर पिथौरागढ़ में जिलाधिकारी का जिम्मा संभाला। नैनीताल में कुमाऊं मंडल विकास निगम के एमडी का पद संभालने के बाद वह एटीआई नैनीताल में अपर निदेशक भी रहे। इसके बाद नेगी को देहरादून का डीएम बनाया गया। इसके बाद उन्होंने शासन ने अपर सचिव बनाया। वह पीएमजीएसआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी भी रहे हैं। इस समय उनके पास आपदा और वित्त विभाग के अलावा नियोजन, आवास और गोपन विभाग का भी कामकाज है। पीएमयू परियोजना के कार्यक्रम निदेशक भी हैं। वर्ष 2013 की आपदा के बाद पुनर्वास व पुनर्निर्माण कार्यो के लिए केंद्र सरकार के आर्थिक मामले व वित्त मंत्रालय और एशियाई विकास बैक की ओर से उत्तराखंड को बेस्ट परफॉर्मिंग प्रोजेक्ट अवार्ड प्रदान किया गया है। इसमें अमित नेगी का अहम योगदान रहा है। उत्तराखंड एकमात्र ऐसा प्रदेश है जहां आपदा प्रबंधन मंत्रालय के अधीन एक प्राधिकरण के अलावा एक स्वायत्त आपदा न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र भी गठित किया गया है। ■

> “अमित नेगी ने आईआईटी कानपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बीटेक करने के बाद सिविल सेवा में जाने का फैसला किया और पहले ही प्रयास में आईएएस बन गए। अमित नेगी की पहली पोस्टिंग बतौर संयुक्त मजिस्ट्रेट रुड़की में हुई। फिर उन्होंने पहले चंपावत और फिर पिथौरागढ़ में जिलाधिकारी का जिम्मा संभाला।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

जगत सिंह चौधरी 'जंगली'

वन एवं पर्यावरण प्रेमी

रैंक
50

उत्तराखंड में मिश्रित वनों की अवधारणा को मजबूत करने और उसे धरती पर साकार करने में जगत सिंह 'जंगली' की बड़ी भूमिका है। वन विभाग और विज्ञान दोनों का दावा था कि इतनी ऊंचाई पर हरियाली की बात सोचना ही अवैज्ञानिक किस्म की सोच है। कुछ वनस्पतियां यहां जरूर उग सकती हैं लेकिन जंगल जैसी बातें इतनी ऊंचाई पर संभव नहीं है। लेकिन जंगली ने वह कर दिखाया जो पूरा सरकारी महकमा मिलकर नहीं कर सका। रूद्रप्रयाग जिले के कोटमल्ला गांव निवासी 65 वर्षीय जगत सिंह को वन एवं पर्यावरण प्रेम ने ही जंगली बना दिया। बुनियादी स्कूली शिक्षा पाए एवं बीएसएफ से सेवानिवृत जंगली ने यह भी साबित कर दिखाया कि प्रकृति से बड़ा कोई शिक्षक नहीं होता। मिश्रित वनों के उनके प्रयोग इतने सफल हुए हैं कि आज देशभर के विश्वविद्यालय जंगली को पर्यावरण की शिक्षा देने बुलाते हैं। मिश्रित वनों के रोपण और संरक्षण मे जुटे जंगली ने अपने गांव कोटमल्ला में दो हेक्टेयर से अधिक ऊबड़-खाबड़ पथरीली पहाड़ी भूमि को वर्षों की मेहनत के बाद वनखेती के रूप में बदल डाला। उन्होंने जमीन को ही नहीं बदला, बल्कि पर्यावरण और वनविज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाले बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की सोच भी बदल डाली। जंगली ने डेढ़ दशक की मेहनत के बाद विभिन्न ऊंचाईयों और पर्यावरणीय स्थितियों में उगने वाले लगभग 60 प्रजातियों के चालीस हजार से अधिक पेड़ों वाला मिश्रित वन विकसित किया। मिश्रित वन से अब गांव के लोगों को चारा पत्ती तो मिलती ही है, वन और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा भी मिलती है। जंगली के परदादा साधु सिंह और दादा शेर सिंह प्रकृति प्रेमी थे। उनके दादा अपने जमाने में जंगलों के प्रति अपने लगाव के लिये प्रसिद्ध थे जिसके लिये ब्रिटिश सरकार ने 'वाकसिद्धि' की उपाधि दी और पांच रुपये मासिक की पेंशन भी मुहैया करवाई। जगत सिंह ने अपने इलाके में इतने पौधे लगाए कि लोगों ने आदर से उन्हें 'जंगली' का संबोधन दे दिया। ■

> मिश्रित वनों के रोपण और संरक्षण में जुटे जंगली ने अपने गांव कोटमल्ला में दो हेक्टेयर से अधिक ऊबड़-खाबड़ पथरीली पहाड़ी भूमि को वर्षों की मेहनत के बाद वनखेती के रूप में बदल डाला। उन्होंने जमीन को ही नहीं बदला, बल्कि पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाले बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की सोच भी बदल डाली।

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

पहाड़ की चिट्ठी
HILL MAIL
(एक अभियान! पहाड़ों की ओर लौटने का)
www.hillmail.in

हिल-मेल
एक अभियान पहाड़ों की ओर लौटने का

उत्तराखंड की हर छोटी-बड़ी खबरों के लिए

Login करें

www.hillmail.in

We are On:

https://www.facebook.com/mailto.hillmail
https://twitter.com/hillmail
YouTube https://www.youtube.com/user/hillmailmission/featured

इस अभियान से जुड़ने, लेख, विज्ञापन और प्रसार के लिए संपर्क करें

HILLMAIL FOUNDATION

Delhi Office : 1515/G1-G2, Wazir Nagar, Kotla Mubarakpur, New Delhi - 110003
Dehadun Office: 152, Street No. 1, Rajendra Nagar, Dehradun - 248001
Mobiles: 9971161880, 9811985655, 8851726320 **E-mail**: mailtohillmail@gmail.com, editorhillmail@gmail.com

December_2017 Hillmail Issue_New:Layout 1 1/29/2018 9:37 PM Page

रुडयार्ड किपलिंग ने
उन्हें अपनी कल्पनाओं
में बसाया और अब हम
उन्हें बसा रहे हैं,
एक नए परिवेश में।

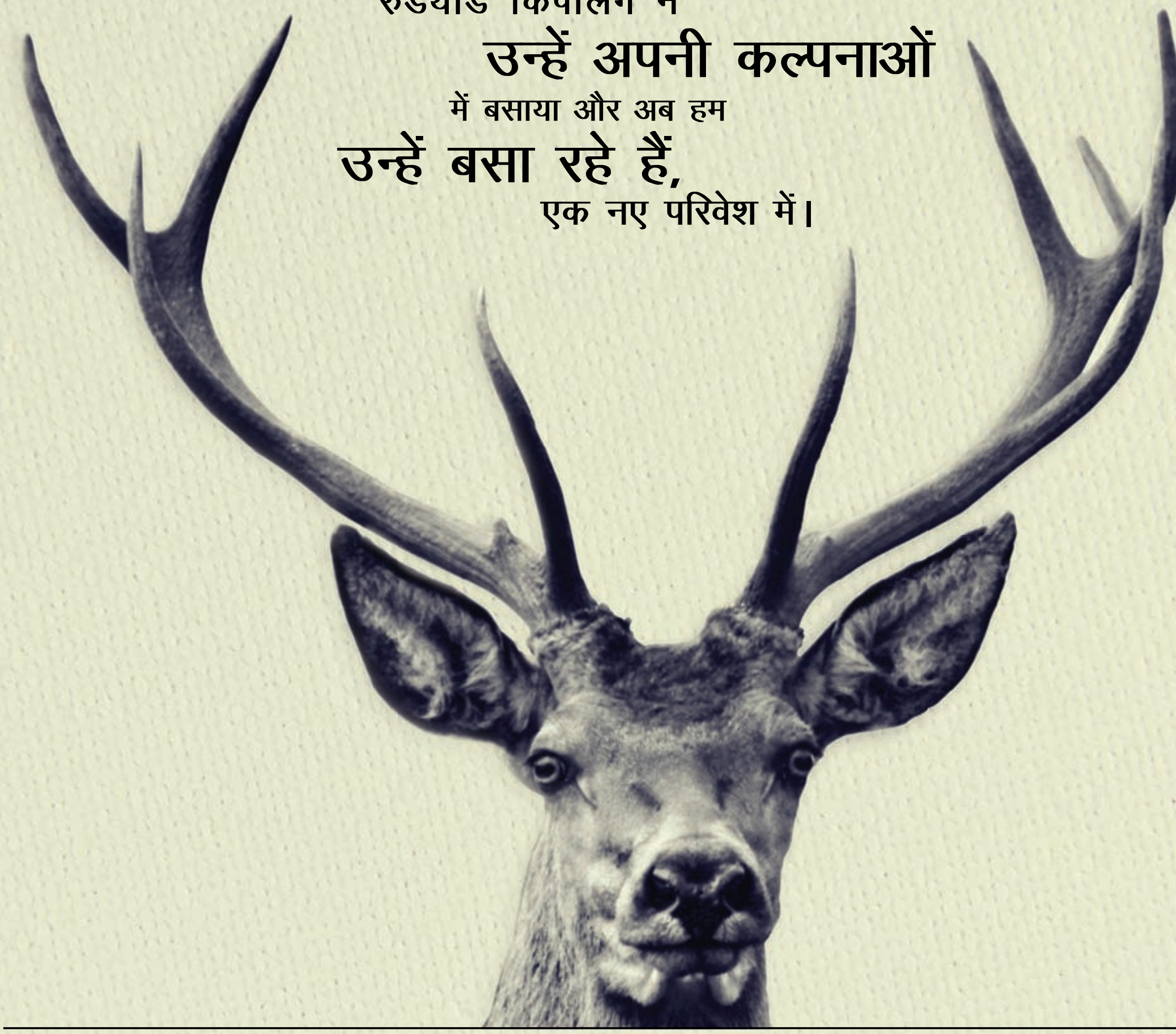

''ओएनजीसी बारासिंघा (ईस्टर्न स्वैम्प डीअर) संरक्षण परियोजना''

एक दुर्लभ प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये ओएनजीसी की सीएसआर पहल।

असम में पाये जाने वाले बारासिंघा या ईस्टर्न स्वैम्प डीअर *(Rucervus duvaucelii ranjitsinhi)* आज विलुप्त होने की कगार पर है। प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने जिस से मंत्रमुग्ध हो कर उसकी सुन्दरता को अपनी दूसरी किताब 'द सेकंड जंगल बुक' में कैद किया हो, उस जीव के लिये यह काफी दुखद स्थिति है।

ओएनजीसी ने इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये अपने कदम बढ़ाये, और वो भी बिल्कुल सही समय पर।

इसके पहले चरण के अन्तर्गत इनकी अनुमानित आबादी, अनुकूल पर्यावरण, पशु-चिकित्सा अंतःक्षेप एवं सामान्य अध्ययन और जागरूकता अभियान किया गया। इनके स्थानांतरण के लिये मानस राष्ट्रीय उद्यान को चुना गया, जो इनके रहने के लिये बिल्कुल उपयुक्त स्थान था।

काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से 19 बारासिंघो को मानस में स्थानांतरित करना बहुत ही कठिन काम था। योजना के इस अत्यंत कठिन दूसरे चरण को दक्षिण अफ्रीका से बुलाये गये वन्यजीव विशेषज्ञों ने बहुत खास तरीके से अंजाम दिया। 19 बारासिंघो का स्थानांतरण खास तंबुओ में किया गया, जिनको अन्दर से उनके प्राकृतिक आवास जैसा ही बनाया गया था। कुछ ही महीनों में 6 नवजात बारासिंघो ने झुण्ड में जुड़कर, स्थानांतरण की खुशी को दुगना कर दिया।

इस योजना के विस्तार के तीसरे चरण के अन्तर्गत 20 अतिरिक्त बारासिंघो का स्थानांतरण किया जा रहा है।

यह परियोजना संतुलित पर्यावरण की ओर ओएनजीसी की एक शुरुआत है। लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण करने के लिये प्रेरित, हमारा संगठन प्रकृति की असली सुंदरता को बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध है।

ओएनजीसी
ONGC

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालयः- पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऊर्जा भवन, 5, नैलसन मंण्डेला मार्ग, वंसत कुँज, नई दिल्ली-110070
दूरभाषः 011-26752021, 26122148, फैक्सः 011-26129091 www.ongcindia.com /ONGC Limited @ONGC_

RNI REGD. DELBIL/2016/69806

गेल GAIL

गेल (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

देव भूमि के विकास को मिलती नई दिशा, हरित ऊर्जा के साथ

उत्तराखण्ड के निवासियों को प्राकृतिक गैस के बेमिसाल लाभों का उपहार

परियोजना के लाभ

- घरों को पर्यावरण अनुकूल प्राकृतिक गैस की आपूर्ति
- पाइपलाइन नेटवर्क द्वारा रूद्रपुर, काशीपुर, जसपुर, बाजपुर, खटीमा, सितारगंज और गदरपुर के सभी प्रमुख मांग केन्द्रों को आपूर्ति
- लोगों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रोज़गार के अवसर
- सीएनजी स्टेशनों से बस, कार, ऑटो और दो पहिया वाहनों को सस्ता ईंधन
- प्रदूषण मुक्त पर्यावरण से स्वस्थ जीवन सुनिश्चित
- उद्योगों को कम कीमत में ईंधन की लगातार आपूर्ति

प्राकृतिक गैसः नई पीढ़ी का स्मार्ट ईंधन | पर्यावरण-अनुकूल | सुरक्षित | कुशल

पंजीकृत कार्यालय: गेल भवन, 16, भीकाएजी कामा प्लेस, आर. के. पुरम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110066; वेबसाइट: www.gailonline.com; सीआईएन: L40200DL1984GOI018976

पर हमें फॉलो करें